॥ श्रीः ॥

इतिहास-पुराण पंचांग विशेष

कौन-सी घटना कब हुई · कब क्या करें, क्या न करें — मूल श्लोकों सहित

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण

श्रीमद्भागवत

महाभारत

27 पर्व/घटनाएँ · 98 व्रत, नियम

इस संकलन के विषय में

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत और महाभारत — इन तीन ग्रन्थों के संस्कृत मूल में पंचांग विवरण (मास, तिथि, नक्षत्र, काल) सहित कहे गए पर्व, घटनाएँ, व्रत और विधि-निषेध यहाँ संकलित हैं — कौन-सी घटना कब हुई, कब क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। प्रत्येक विषय से पहले पंचांग विवरण का सार और उसके बाद मूल श्लोक दिए गए हैं।

मूल ग्रन्थ

रामायण — गीताप्रेस संस्करण (रा.); भागवत — माध्व सम्प्रदाय का पाठ, जिसका अध्याय-विभाजन उसी सम्प्रदाय का है (आठवें स्कन्ध में 22, दसवें में 105 अध्याय) (भा.); महाभारत — कुम्भकोणम् पाठ (म.भा.); उसमें जो श्लोक नहीं हैं या भिन्न हैं, उनके लिए शास्त्रि-वाविल्ल (दाक्षिणात्य) और भाण्डारकर (पुणे) प्रतियाँ — ऐसे स्थानों पर श्लोक-समूह के अन्त में उस प्रति का नाम और सार में वह विवरण दिया गया है। श्लोक संख्याएँ उन्हीं पाठों की हैं।

मास गणना

अमान्त चान्द्रमान — मास शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर अमावस्या को समाप्त होता है।

काल

जहाँ मूल में दिन का समय (मध्याह्न, प्रातःकाल, प्रदोष, निशीथ) बताया गया है, वहाँ उस समय जिस दिन वह तिथि/नक्षत्र हो, वही पर्व का दिन है।

पक्ष न बताया हो तो

"द्वादशी" जैसी तिथि का पक्ष न बताया हो तो दोनों पक्ष लिए गए हैं।

"अतिरिक्त अंश"

कुम्भकोणम् पाठ ने जिन अंशों को अतिरिक्त (' ... ') चिह्नित किया है, उनके श्लोकों को सार में ऐसा बताया गया है।

लिंक

विषय-सूची का प्रत्येक विषय उसके पृष्ठ पर ले जाता है; प्रत्येक श्लोक-समूह के अन्त में "↑ विषय-सूची पर वापस" लिंक है; सार में दी गई श्लोक संख्याएँ उस श्लोक पर ले जाती हैं।

विषय-सूची

भाग 1 — पर्व और घटनाएँ

1	श्रीरामनवमी	रामायण
2	श्रीराम जन्म नक्षत्र योग	रामायण
3	भीष्माष्टमी — भीष्म का देहत्याग	महाभारत
4	श्रवण द्वादशी — वामन जन्म योग	भागवत
5	श्रीराम यौवराज्याभिषेक मुहूर्त	रामायण
6	श्रीराम का नन्दिग्राम लौटना	रामायण
7	श्रीकृष्ण का शान्तिदूत बनकर प्रस्थान	महाभारत
8	अर्जुन का जन्म	महाभारत
9	भीमसेन का जन्म; मघा त्रयोदशी की पितृगाथा	महाभारत
10	युधिष्ठिर की राजसूय दीक्षा	महाभारत
11	युधिष्ठिर का अश्वमेध संकल्प	महाभारत
12	युधिष्ठिर की अश्वमेध दीक्षा	महाभारत
13	भीम द्वारा जरासन्ध वध	महाभारत
14	भीम-जरासन्ध युद्ध का आरम्भ	महाभारत
15	द्रौपदी स्वयंवर मुहूर्त; चन्द्ररश्मि-पान व्रत	महाभारत
16	पाण्डवों का वारणावत प्रस्थान	महाभारत
17	अम्बरीष का द्वादशी पारण	भागवत
18	धृतराष्ट्र का वनप्रस्थान	महाभारत
19	पाण्डवों का कार्तिकी जागरण	महाभारत
20	पाण्डवों का काम्यक वन प्रस्थान	महाभारत
21	पाण्डवों की तीर्थयात्रा का आरम्भ	महाभारत
22	कार्तिकी — विरूपाक्ष का ब्राह्मण भोजन, तिलराशि दान	महाभारत
23	माघी — विरूपाक्ष का भोजन, ऋषियों का कौशिकी गमन	महाभारत
24	आषाढ़ी — विरूपाक्ष का ब्राह्मण भोजन	महाभारत
25	प्रौष्ठपदी — शर्करी गोदान	महाभारत
26	इन्द्रध्वज पात (आश्विनी)	रामायण
27	आषाढ़ी — वर्षावास का आरम्भ	रामायण

भाग 2 — व्रत, विधि-निषेध

एकादशी – द्वादशी

28	द्वादशी पारण का नियम	भागवत
29	द्वादशी के नियम (हर मास)	महाभारत
30	मार्गशीर्ष द्वादशी — केशव पूजा	महाभारत

31	पौष द्वादशी — नारायण पूजा	महाभारत
32	माघ द्वादशी — माधव पूजा	महाभारत
33	फाल्गुन द्वादशी — गोविन्द पूजा	महाभारत
34	चैत्र द्वादशी — विष्णु पूजा	महाभारत
35	वैशाख द्वादशी — मधुसूदन पूजा	महाभारत
36	ज्येष्ठ द्वादशी — त्रिविक्रम पूजा	महाभारत
37	आषाढ़ द्वादशी — वामन पूजा	महाभारत
38	श्रावण द्वादशी — श्रीधर पूजा	महाभारत
39	भाद्रपद द्वादशी — हृषीकेश पूजा	महाभारत
40	आश्विन द्वादशी — पद्मनाभ पूजा	महाभारत
41	कार्तिक द्वादशी — दामोदर पूजा	महाभारत
42	कृष्ण एकादशी उपवास, द्वादशी पूजा	महाभारत
43	एकादशी-द्वादशी को भागवत श्रवण	भागवत

पयोव्रत

44	पयोव्रत से पूर्व स्नान (सिनीवाली)	भागवत
45	अदिति के पयोव्रत का समापन	भागवत

पूर्णिमा के स्नान और दान

46	कार्तिक पूर्णिमा स्नान	महाभारत
47	माघ पूर्णिमा स्नान	महाभारत
48	वैशाख पूर्णिमा के दान	महाभारत
49	भागवत दान (प्रौष्ठपदी)	भागवत

श्रवण

50	श्रवण व्रत	महाभारत
51	श्रवण नक्षत्र के नियम	महाभारत
52	श्रवण के दिन ध्रुव चरित कथन	भागवत

पूर्णिमा, अमावस्या, पर्व

53	अमावस्या के नियम	महाभारत
54	पूर्णिमा के नियम	महाभारत
55	पूर्णिमा को चन्द्रोदय पर बलि	महाभारत
56	पर्व के नियम (पूर्णिमा, अमावस्या)	महाभारत
57	पर्वों पर वृत्रवध आख्यान का श्रवण	भागवत
58	तिथियों पर ध्रुव चरित कथन	भागवत
59	दर्श-पौर्णमास इष्टि	रामायण, भागवत
60	माघ पंचदशी श्राद्ध	महाभारत

ग्रहण, अयन, विषुव, व्यतीपात

61	ग्रहण के नियम	रामायण, भागवत, महाभारत

62	उत्तरायण पुण्यकाल	महाभारत
63	दक्षिणायन पुण्यकाल	महाभारत
64	विषुव के कृत्य	महाभारत
65	व्यतीपात के कृत्य	महाभारत
66	श्रेयःकाल (भागवत सप्तम स्कन्ध)	भागवत

व्रत (आरम्भ – समापन)

67	पुंसवन व्रत का आरम्भ	भागवत
68	पुंसवन व्रत का समापन	भागवत
69	नक्षत्राङ्ग (रूप-सौभाग्य) व्रत का आरम्भ	महाभारत
70	चान्द्रायण व्रत का आरम्भ	महाभारत
71	नागबलि (कार्तिक कृष्ण अष्टमी, आश्लेषा)	महाभारत

मास के नियम

72	चैत्र मास के नियम	महाभारत
73	वैशाख मास के नियम	महाभारत
74	ज्येष्ठ मास के नियम	महाभारत
75	आषाढ़ मास के नियम	महाभारत
76	श्रावण मास के नियम	महाभारत
77	भाद्रपद मास के नियम	महाभारत
78	आश्विन मास के नियम	महाभारत
79	कार्तिक मास के नियम	महाभारत
80	मार्गशीर्ष मास के नियम	महाभारत
81	पौष मास के नियम	महाभारत
82	माघ मास के नियम	महाभारत
83	फाल्गुन मास के नियम	महाभारत

तिथि के नियम

84	प्रतिपदा श्राद्ध	महाभारत
85	वैशाख तृतीया श्राद्ध	महाभारत
86	पंचमी के नियम	महाभारत
87	षष्ठी-सप्तमी को सूर्य पूजा	महाभारत
88	अष्टमी का नियम	महाभारत
89	शुक्ल दशमी — पुण्डरीक तीर्थ स्नान	महाभारत
90	त्रयोदशी श्राद्ध	महाभारत
91	चतुर्दशी के नियम	महाभारत
92	कृष्ण चतुर्दशी	महाभारत
93	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी — सरस्वती संगम स्नान	महाभारत
94	भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी श्राद्ध	महाभारत
95	भाद्रपद कृष्ण पक्ष मघा श्राद्ध	महाभारत

उपाकर्म, मुहूर्त प्रशस्ति

96	सामवेद उपाकर्म	रामायण
97	पुष्य — अभिषेक प्रशस्ति	रामायण
98	उत्तरा फाल्गुनी — विवाह प्रशस्ति	रामायण

नक्षत्र के नियम (हर मास)

99	अश्विनी नक्षत्र के नियम	महाभारत
100	भरणी नक्षत्र के नियम	महाभारत
101	कृत्तिका नक्षत्र के नियम	महाभारत
102	रोहिणी नक्षत्र के नियम	महाभारत
103	मृगशिरा नक्षत्र के नियम	महाभारत
104	आर्द्रा नक्षत्र के नियम	महाभारत
105	पुनर्वसु नक्षत्र के नियम	महाभारत
106	पुष्य नक्षत्र के नियम	महाभारत
107	आश्लेषा नक्षत्र के नियम	महाभारत
108	मघा नक्षत्र के नियम	महाभारत
109	पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के नियम	महाभारत
110	उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के नियम	महाभारत
111	हस्त नक्षत्र के नियम	महाभारत
112	चित्रा नक्षत्र के नियम	महाभारत
113	स्वाती नक्षत्र के नियम	महाभारत
114	विशाखा नक्षत्र के नियम	महाभारत
115	अनुराधा नक्षत्र के नियम	महाभारत
116	ज्येष्ठा नक्षत्र के नियम	महाभारत
117	मूल नक्षत्र के नियम	महाभारत
118	पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के नियम	महाभारत
119	उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के नियम	महाभारत
120	धनिष्ठा नक्षत्र के नियम	महाभारत
121	शतभिषा नक्षत्र के नियम	महाभारत
122	पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के नियम	महाभारत
123	उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के नियम	महाभारत
124	रेवती नक्षत्र के नियम	महाभारत

अन्य काल नियम

125	अन्य काल नियम (बिना निश्चित तिथि के)	महाभारत

भाग 1 — पर्व और घटनाएँ

महत्त्व/प्रसिद्धि के क्रम में — प्रसिद्ध पहले, कम ज्ञात बाद में।

1 श्रीरामनवमी

रामायण

पंचांग विवरण

चैत्र शुक्ल नवमी, पुनर्वसु नक्षत्र (अदिति देवता), कर्क लग्न। चैत्र में कर्क लग्न मध्याह्न के समय उदित होता है — अतः काल: मध्याह्न।

मूल श्लोक: रा. 1.18.8 · रा. 1.18.9 · रा. 1.18.10

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः।
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ॥ ॥१-१८-८॥

नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु।
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह॥ ॥१-१८-९॥

प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम्।
कौसल्याजनयद् रामं दिव्यलक्षणसंयुतम्॥ ॥१-१८-१०॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

2 श्रीराम जन्म नक्षत्र योग

रामायण

पंचांग विवरण

चैत्र नवमी और पुनर्वसु नक्षत्र दोनों का एक साथ मिलना, मध्याह्न में। यह ठीक संयोग हर वर्ष नहीं आता (औसतन वर्ष में 0.44 दिन) — केवल कुछ वर्षों में।

मूल श्लोक: रा. 1.18.8 · रा. 1.18.9 · रा. 1.18.10

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः।
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ॥ ॥१-१८-८॥

नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु।
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह॥ ॥१-१८-९॥

प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम्।
कौसल्याजनयद् रामं दिव्यलक्षणसंयुतम्॥ ॥१-१८-१०॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

3 भीष्माष्टमी — भीष्म का देहत्याग

महाभारत

पंचांग विवरण

माघ शुक्ल अष्टमी, रोहिणी (प्राजापत्य) नक्षत्र, सूर्य मध्याह्न में — उत्तरायण आरम्भ होने के बाद भीष्म ने देह त्यागा। ये दो श्लोक कुम्भकोणम् पाठ में अतिरिक्त अंश के रूप में चिह्नित स्थान पर हैं।

मूल श्लोक: म.भा. 12.46.3 · म.भा. 12.46.4

प्रवृत्तमात्रे त्वयनमुत्तरेण दिवाकरे ।
`शुक्लपक्षस्य चाष्टम्यां माघमासस्य पार्थिव॥ ॥१२-४६-३॥

प्राजापत्ये च नक्षत्रे मध्यं प्राप्ते दिवाकरे ।'
समावेशयदात्मानमात्मन्येव समाहितः॥ ॥१२-४६-४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

4 श्रवण द्वादशी — वामन जन्म योग

भागवत

पंचांग विवरण

द्वादशी तिथि और श्रवण नक्षत्र का संयोग, अभिजित् मुहूर्त — सूर्य मध्याह्न में। भागवत न मास बताता है न पक्ष; इसलिए जब भी यह योग बने (वर्ष में लगभग 1.3 दिन)।

मूल श्लोक: भा. 8.17.5 · भा. 8.17.6

श्रोणायां श्रवणद्वादश्यां मुहूर्तेऽभिजिति प्रभुः।
सर्वे नक्षत्रताराद्याश्चक्रुस्तज्जन्म दक्षिणम्॥ ॥८-१७-५॥

द्वादश्यां सविताऽतिष्ठन्मध्यन्दिनगतो नृप।
विजया नाम सा प्रोक्ता यस्यां जन्म विदुर्हरेः॥ ॥८-१७-६॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

5 श्रीराम यौवराज्याभिषेक मुहूर्त

रामायण

पंचांग विवरण

चैत्र मास, पुष्य नक्षत्र, कर्क लग्न (श्रीराम का जन्म लग्न) — चैत्र में यह मध्याह्न है। दशरथ द्वारा निश्चित अभिषेक मुहूर्त।

मूल श्लोक: रा. 2.3.4 · रा. 2.3.41 · रा. 2.4.2 · रा. 2.15.3

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः।
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम्॥ ॥२-३-४॥

तस्मात् त्वं पुष्ययोगेन यौवराज्यमवाप्नुहि।
कामतस्त्वं प्रकृत्यैव निर्णीतो गुणवानिति॥ ॥२-३-४१॥

श्व एव पुष्यो भविता श्वोऽभिषेच्यस्तु मे सुतः।
रामो राजीवपत्राक्षो युवराज इति प्रभुः॥ ॥२-४-२॥

उदिते विमले सूर्ये पुष्ये चाभ्यागतेऽहनि।
लग्ने कर्कटके प्राप्ते जन्म रामस्य च स्थिते॥ ॥२-१५-३॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

6 श्रीराम का नन्दिग्राम लौटना

रामायण

पंचांग विवरण

चौदहवाँ वर्ष पूर्ण होने पर पंचमी को श्रीराम भरद्वाज आश्रम पहुँचे; हनुमान ने भरत से कहा "कल पुष्य नक्षत्र में राम को देखोगे"। अतः: षष्ठी तिथि + पुष्य नक्षत्र। मास और पक्ष नहीं बताए गए।

मूल श्लोक: रा. 6.124.1 · रा. 6.126.54

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पञ्चम्यां लक्ष्मणाग्रजः।
भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्॥ ॥६-१२४-१॥

तां गङ्गां पुनरासाद्य वसन्तं मुनिसंनिधौ।
अविघ्नं पुष्ययोगेन श्वो रामं द्रष्टुमर्हसि॥ ॥६-१२६-५४॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

7 श्रीकृष्ण का शान्तिदूत बनकर प्रस्थान

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक (कौमुद) मास, रेवती नक्षत्र, मैत्र मुहूर्त — प्रातःकाल, शरद् ऋतु का अन्त। उपप्लव्य से श्रीकृष्ण सन्धि हेतु हस्तिनापुर के लिए चले।

मूल श्लोक: म.भा. 5.76.15 · म.भा. 5.82.5 · म.भा. 5.82.6 · म.भा. 5.82.7

श्वोभूते धृतराष्ट्रस्य समीपं प्राप्य पाण्डव ।
यतिष्ये प्रशमं कर्तुं युष्मदर्थमहापयन्॥ ॥५-७६-१५॥

श्रीभगवानुवाच
धर्म्यमस्मद्धितं चैव कुरूणां यदनामयम् ।
एष यास्यामि राजानं धृतराष्ट्रमभीप्सया॥ ॥५-८२-५॥

वैशम्पायन उवाच
ततो व्यपेते तमसि सूर्ये विमल उद्गते ।
मैत्रे मुहूर्ते सम्प्राप्ते मृद्वर्चिषि दिवाकरे॥ ॥५-८२-६॥

कौमुदे मासि रेवत्यां शरदन्ते हिमागमे ।
स्फीतसस्यसुखे काले कल्यः सत्ववतां वरः॥ ॥५-८२-७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

8 अर्जुन का जन्म

महाभारत

पंचांग विवरण

फाल्गुन मास, पूर्वा-उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रों की सन्धि, दिन में — मध्याह्न काल माना गया। श्लोक अतिरिक्त अंश में हैं।

मूल श्लोक: म.भा. 1.132.16 · म.भा. 1.132.17 · म.भा. 1.134.12

वैशम्पायन उवाच ।

एवमुक्ता ततः शक्रमाजुहाव यशस्विनी ।

अथाजगाम देवेन्द्रो जनयामास चार्जुनम्॥ ॥१-१३२-१६॥

`उत्तराभ्यां तु पूर्वाभ्यां फल्गुनीभ्यां ततो दिवा ।

जातस्तु फाल्गुने मासि तेनासौ फल्गुनःस्मृतः'॥ ॥१-१३२-१७॥

यस्मिन्नृक्षे समुत्पन्नः पार्थस्तस्य च धीमतः ।

तस्मिन्नुत्तरफल्गुन्यां प्रवृत्ते स्वस्तिवाचने॥ ॥१-१३४-१२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

9 भीमसेन का जन्म; मघा त्रयोदशी की पितृगाथा

महाभारत

पंचांग विवरण

त्रयोदशी तिथि, मघा नक्षत्र, मध्याह्न (सूर्य आकाश के मध्य में), पित्र्य मुहूर्त, बृहस्पति सिंह में उदित — कुन्ती ने भीम को जन्म दिया; उसी दिन से पहले की रात दुर्योधन का जन्म हुआ। पक्ष और मास नहीं बताए गए। इसी मघा त्रयोदशी को (दक्षिणायन में) पितरों को घी सहित पायस — पितृगाथा (अनुशासन पर्व)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.135.11 · म.भा. 13.135.12 · म.भा. 13.135.13 · म.भा. 1.129.66 · म.भा. 1.129.67 · म.भा. 1.129.68

गाथाश्चाप्यत्र गायन्ति पितृगीता युधिष्ठिर ।

सनत्कुमारो भगवान्पुरा मय्यभ्यभाषत॥ ॥१३-१३५-११॥

अपि नः स्वकुले जायाद्यो नो दद्यात्त्रयोदशीम् ।

मघासु सर्पिःसंयुक्तं पायसं दक्षिणायने॥ ॥१३-१३५-१२॥

आजेन वाऽपि लौहेन मघास्वेव यतव्रतः ।

हस्तिच्छायासु विधिवत्कर्णव्यजनवीजितम्॥ ॥१३-१३५-१३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

सदा बाणधनुष्पाणिरभवत्कुरुनन्दनः ।

मघे चन्द्रमसा युक्ते सिंहे चाभ्युदिते गुरौ॥ ॥१-१२९-६६॥

दिवा मध्यगते सूर्ये तिथौ पुण्ये त्रयोदशे ।
पित्र्ये मुहूर्ते सा कुन्ती सुषुवे भीममच्युतम्॥ ॥१-१२९-६७॥

यस्मिन्नहनि भमस्तु जज्ञे भीमपराक्रमः ।
तामेव रात्रिं पूर्वां तु जज्ञे दुर्योधनो नृपः॥ ॥१-१२९-६८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

10 युधिष्ठिर की राजसूय दीक्षा

महाभारत

पंचांग विवरण

ज्येष्ठ मास की अमावस्या ("ज्येष्ठामूले" अर्थात् ज्येष्ठ मास)। श्लोक अतिरिक्त अंश में हैं।

मूल श्लोक: म.भा. 2.36.45 · म.भा. 2.36.46 · म.भा. 2.36.47

ततस्ते तु यथाकालं कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ।
दीक्षयाञ्चक्रिरे विप्रा राजसूयाय भारत॥ ॥२-३६-४५॥

`ज्येष्ठामूले अमावास्यां मृगाजिनसमावृतः ।
रौरवाजिनसंवीतो नवनीताक्तदेहवान्' ॥ ॥२-३६-४६॥

दीक्षितः स तु धर्मात्मा धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
जगाम यज्ञायतनं वृतो विप्रैः सहस्रशः॥ ॥२-३६-४७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

11 युधिष्ठिर का अश्वमेध संकल्प

महाभारत

पंचांग विवरण

माघ मास की द्वादशी — शुभ नक्षत्र चुनकर युधिष्ठिर ने भाइयों को बुलाकर अश्वमेध की तैयारी आरम्भ की। उसी प्रसंग में उन्होंने कहा "माघी पूर्णिमा आ गई है, एक मास शेष है", अतः यह शुक्ल द्वादशी है (गणना द्वारा निकाला गया विवरण)।

मूल श्लोक: म.भा. 14.86.3 · म.भा. 14.86.4 · म.भा. 14.86.5

एतस्मिन्नेव काले तु द्वादशीं माघमासिकीम् ।
इष्टं गृहीत्वा नक्षत्रं धर्मराजो युधिष्ठिरः॥ ॥१४-८६-३॥

समानीय महातेजाः सर्वान्भ्रातॄन्महीपतिः ।
भीमं च नकुलं चैव सहदेवं च कौरव॥ ॥१४-८६-४॥

प्रोवाचेदं वचः काले तदा धर्मभृतांवरः ।
आमन्त्र्य वदतां श्रेष्ठो भीमं प्रहरतां वरम्॥ ॥१४-८६-५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

12 युधिष्ठिर की अश्वमेध दीक्षा

महाभारत

पंचांग विवरण

चैत्र पूर्णिमा। व्यास ने यज्ञ का अश्व छोड़ा।

मूल श्लोक: म.भा. 14.72.10 · म.भा. 14.72.12 · म.भा. 14.72.4 · म.भा. 14.73.1

ततोऽब्रवीन्महातेजा व्यासो धर्मात्मजं नृपम् ।
यथाकालं यथायोगं सज्जाः स्म तव दीक्षणे॥ ॥१४-७२-१०॥

अश्वश्चोत्सृज्यतामद्य पृथ्व्यामथ यथाक्रमम् ।
सुगुप्तं चरतां चापि यथाशास्त्रं यथाविधि॥ ॥१४-७२-१२॥

चैत्र्यां हि पौर्णमास्यां तु तव दीक्षा भविष्यति ।
सम्भाराः सम्भ्रियन्तां च यज्ञार्थं पुरुषर्षभ॥ ॥१४-७२-४॥

वैशम्पायन उवाच ।
दीक्षाकाले तु सम्प्राप्ते ततस्ते सुमहर्त्विजः ।
विधिवद्दीक्षयामासुरश्वमेधाय पार्थिवम्॥ ॥१४-७३-१॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

13 भीम द्वारा जरासन्ध वध

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी, रात्रि (निशीथ)। चौदह दिन का युद्ध कार्तिक प्रतिपदा को आरम्भ हुआ, अतः चतुर्दशी शुक्ल पक्ष की है (अमान्त गणना) — यह गणना द्वारा निकाला गया विवरण है। शास्त्रि-वाविल्ल प्रति में "पन्द्रहवीं रात्रि" को थकने की बात है; कुम्भकोणम् और भाण्डारकर (पुणे) प्रतियों में चतुर्दशी की रात्रि।

मूल श्लोक: म.भा. 2.24.34 · म.भा. 2.24.37 · म.भा. 2.25.9 · म.भा. 2.25.10 · म.भा. 2.22.61

तद्वृत्तं तु त्रयोदश्यां समवेतं महात्मनोः ।
चतुर्दश्यां निशायां तु निवृत्तो मागधः क्लमात्॥ ॥२-२४-३४॥

तस्मात्तेऽद्यैव कौन्तेय पीडनीयो जनाधिपः ।
सममेतेन युध्यस्व बाहुभ्यां भरतर्षभ॥ ॥२-२४-३७॥

प्रभञ्जनबलाविष्टो जरासन्धमरिन्दमः ।
उत्क्षिप्य भ्रामयामास बलवन्तं महाबलः॥ ॥२-२५-९॥

भ्रामयित्वा शतगुणं जानुभ्यां भरतर्षभ ।
बभञ्ज पृष्टं सङ्क्षिप्य निष्पिष्य विननाद च॥ ॥२-२५-१०॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

तद्युद्धमासीच्च तयोस् समवेतं महात्मनोः ।
पञ्चदश्यां निशायां तु प्रहीणात्माऽभवत् क्लमात्॥ ॥२-२२-६१॥

— महाभारते (शास्त्रि-वाविल्ल-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

14 भीम-जरासन्ध युद्ध का आरम्भ

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक मास का पहला दिन (प्रतिपदा) — द्वन्द्व युद्ध चौदह दिन चला।

मूल श्लोक: म.भा. 2.24.33

कार्तिकस्य तु मासस्य प्रवृत्तं प्रथमेऽहनि ।
तदा तद्युद्धमभवद्दिनानि दश पञ्च च ।
अनाहारं दिवारात्रमविश्रान्तमवर्तत॥ ॥२-२४-३३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

15 द्रौपदी स्वयंवर मुहूर्त; चन्द्ररश्मि-पान व्रत

महाभारत

पंचांग विवरण

पौष मास, शुक्ल पक्ष, रोहिणी नक्षत्र, शुभ तिथि — पचहत्तर दिन बाद स्वयंवर घोषित हुआ। इसी पौष शुक्ल रोहिणी को खुले आकाश के नीचे सोकर चन्द्रकिरणों का पान करने का व्रत भी (अनुशासन पर्व)। श्लोक अतिरिक्त अंश में हैं।

मूल श्लोक: म.भा. 1.182.28 · म.भा. 1.182.29 · म.भा. 13.189.40 · म.भा. 13.189.44 · म.भा. 13.189.45

ब्राह्मण उवाच
श्रुत्वा पुरोहितेनोक्तं पाञ्चालः प्रीतिमांस्तदा ।
घोषयामास नगरे द्रौपद्यास्तु स्वयंवरम्॥ ॥१-१८२-२८॥

पुष्यमासे तु रोहिण्यां शुक्लपक्षे शुभे तिथौ ।
दिवसैः पञ्चसप्तत्या भविष्यति न संशयः॥ ॥१-१८२-२९॥

द्रव्यहीनाः कथं मर्त्या दरिद्राः साधुवर्तिनः ।
प्राप्नुवन्तीह यज्ञस्य फलं केन च कर्मणा॥ ॥१३-१८९-४०॥

पौषमासस्य शुक्ले वै यदा युज्येत रोहिणी ।
तेन नक्षत्रयोगेन आकाशशयनो भवेत्॥ ॥१३-१८९-४४॥

एकवस्त्रः शुचिः स्नातः श्रद्दधानः समाहितः ।
सोमस्य रश्मयः पीत्वा महायज्ञफलं लभेत्॥ ॥१३-१८९-४५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

16 पाण्डवों का वारणावत प्रस्थान

महाभारत

पंचांग विवरण

फाल्गुन मास, अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र। पक्ष नहीं बताया गया। यह संयोग दुर्लभ है (वर्ष में 0.8 दिन से कम)।

मूल श्लोक: म.भा. 1.157.33

वैशम्पायन उवाच
अष्टमेऽहनि रोहिण्यां प्रयाताः फाल्गुनस्य ते ।
वारणावतमासाद्य ददृशुर्नागरं जनम्॥ ॥१-१५७-३३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

17 अम्बरीष का द्वादशी पारण

भागवत

पंचांग विवरण

कार्तिक मास, द्वादशी, प्रातःकाल। वर्ष भर के द्वादशी व्रत को तीन रात्रि के उपवास से समाप्त कर, द्वादशी का आधा मुहूर्त शेष रहते जल से पारण किया। पक्ष नहीं बताया गया।

मूल श्लोक: भा. 9.6.17 · भा. 9.6.18 · भा. 9.6.26

आरिराधयिषुः कृष्णं महिष्या तुल्यशीलया।
युक्तः सांवत्सरं वीरो दधार द्वादशीव्रतम्॥ ॥९-६-१७॥

व्रतान्ते कार्तिके मासि त्रिरात्रं समुपोषितः।
स्नातः कदाचित् कालिन्द्यां हरिं मधुवनेऽर्चयत्॥ ॥९-६-१८॥

मुहूर्तार्धावशिष्टायां द्वादश्यां पारणं प्रति।
चिन्तयामास धर्मज्ञो द्विजैस्तद्धर्मसङ्कटे॥ ॥९-६-२६॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

18 धृतराष्ट्र का वनप्रस्थान

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक पूर्णिमा, प्रातःकाल — इष्टि करने के बाद धृतराष्ट्र वन को चले।

मूल श्लोक: म.भा. 15.12.3 · म.भा. 15.12.4 · म.भा. 15.12.5 · म.भा. 15.16.1

धृतराष्ट्रो महाराजो वनवासाय दीक्षितः ।
गमिष्यति वनं राजन्नागतां कार्तिकीमिमाम्॥ ॥१५-१२-३॥

स त्वां कुरुकुलश्रेष्ठ किञ्चिदर्थमभीप्सति ।
श्राद्धमिच्छति दातुं स गाङ्गेयस्य महात्मनः॥ ॥१५-१२-४॥

द्रोणस्य सोमदत्तस्य बाह्लीकस्य च धीमतः ।
पुत्राणां चैव सर्वेषां ये चान्ये सुहृदो हताः ।
यदि चाप्यनुजानीषे सैन्धवापशदस्य च॥ ॥१५-१२-५॥

वैशम्पायन उवाच ।
ततः प्रभाते राजा स धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः ।
आनाय्य पाण्डवान्वीरान्वनवासे कृतक्षणः॥ ॥१५-१६-१॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

19 पाण्डवों का कार्तिकी जागरण

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि (पर्वसन्धि) — पाण्डवों ने तपस्वियों के साथ शरद् पूर्णिमा की पवित्र रात्रि बिताई।

मूल श्लोक: म.भा. 3.184.16 · म.भा. 3.184.17

तेषां पुण्यतमा रात्रिः पर्वसन्धौ स्म शारदी ।
तत्रैव वसतामासीत्कार्तिकी जनमेजय॥ ॥३-१८४-१६॥

पुण्यकृद्भिर्महासत्वैस्तापसैः सह पाण्डवाः ।
तत्सर्वं भरतश्रेष्ठ समूहुर्योगमुत्तमम्॥ ॥३-१८४-१७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

20 पाण्डवों का काम्यक वन प्रस्थान

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा — कार्तिकी बीतने पर कृष्ण पक्ष के आरम्भ में, धौम्य के साथ।

मूल श्लोक: म.भा. 3.184.16 · म.भा. 3.184.18

तेषां पुण्यतमा रात्रिः पर्वसन्धौ स्म शारदी ।
तत्रैव वसतामासीत्कार्तिकी जनमेजय॥ ॥३-१८४-१६॥

तमिस्राभ्युदये तस्मिन्धौम्येन सह पाण्डवाः ।
सूतैः पौरोगवैः साकं काम्यकं प्रययुर्वनम्॥ ॥३-१८४-१८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

21 पाण्डवों की तीर्थयात्रा का आरम्भ

महाभारत

पंचांग विवरण

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष, पुष्य नक्षत्र — मार्गशीर्ष पूर्णिमा बीतने के बाद। ठीक तिथि नहीं बताई गई।

मूल श्लोक: म.भा. 3.90.26 · म.भा. 3.91.25 · म.भा. 3.91.26 · म.भा. 3.91.27

ततः कुन्तीसुतो राजा लघुभिर्ब्राह्मणैः सह ।
लोमशेन च सुप्रीतस्त्रिरात्रं काम्यकेऽवसत्॥ ॥३-९०-२६॥

ते तथेति प्रतिज्ञाय कृष्णया सह पाण्डवाः ।
कृतस्वस्त्ययनाः सर्वे मुनिभिर्देवमानुषैः॥ ॥३-९१-२५॥

लोमशस्योपसङ्गृह्य पादौ द्वैपायनस्य च ।
नारदस्य च राजेन्द्र देवर्षेः पर्वतस्य च॥ ॥३-९१-२६॥

धौम्येन सहिता वीरास्तथा तैर्वनवासिभिः ।
मार्गशीर्ष्यामतीतायां पुष्येण प्रययुस्ततः॥ ॥३-९१-२७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

22 कार्तिकी — विरूपाक्ष का ब्राह्मण भोजन, तिलराशि दान

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक पूर्णिमा: (1) विरूपाक्ष प्रतिवर्ष हज़ार ब्राह्मणों को भोजन कराकर रत्न देता था — गौतम उसी दिन पहुँचे; (2) उपवास करके कौमुद मास में, विशेषकर पूर्णिमा को, तिलराशि का दान; (3) धृतराष्ट्र ने कार्तिकी को महादान का संकल्प किया।

मूल श्लोक: म.भा. 12.168.23 · म.भा. 12.169.14 · म.भा. 12.169.15 · म.भा. 12.170.9 · म.भा. 12.170.10 · म.भा. 12.170.11 · म.भा. 12.170.16 · म.भा. 13.236.4 · म.भा. 13.236.5 · म.भा. 13.236.6 · म.भा. 13.236.7 · म.भा. 15.14.11 · म.भा. 15.14.12 · म.भा. 15.14.15 · म.भा. 15.15.15

मम त्वं निलयं प्राप्तः प्रियातिथिरनिन्दितः ।
पूजितो यास्यसि प्रातर्विधिदृष्टेन कर्मणा॥ ॥१२-१६८-२३॥

ततः प्रभातसमये सुखं पृष्ट्वाऽब्रवीदिदम् ।
गच्छ सौम्य पथाऽनेन कृतकृत्यो भविष्यसि॥ ॥१२-१६९-१४॥

इतस्त्रियोजनं गत्वा राक्षसाधिपतिर्महान् ।
विरूपाक्ष इति ख्यातः सखा मम महाबलः॥ ॥१२-१६९-१५॥

कार्तिक्यामद्य भोक्तारः सहस्रं मे द्विजोत्तमाः ।
तत्रायमपि भोक्ता तु देयमस्मै च मे धनम्॥ ॥१२-१७०-९॥

स चाद्य दिवसः पुण्यो ह्यतिथिश्चायमागतः ।
सङ्कल्पितं चैव धनं किं विचार्यमतः परम्॥ ॥१२-१७०-१०॥

ततः सहस्रं विप्राणां विदुषां समलङ्कृतम् ।
स्नातानामनुलिप्तानामहतक्षौमवाससाम्॥ ॥१२-१७०-११॥

ततो जाम्बूनदीः पात्रीर्वज्राङ्का विमलाः शुभाः ।
वरान्नपूर्णा विप्रेभ्यः प्रादान्मधुघृतप्लुताः॥ ॥१२-१७०-१६॥

न्यायतस्तु तिलाञ्शुद्धान्संहृत्याथ स्वशक्तितः ।
तिलराशिं पुनः कुर्यात्पर्वताभं सुरत्नकम् ।
महान्तं यदि वा स्तोकं नानाद्रव्यसमन्वितम्॥ ॥१३-२३६-४॥

सुवर्णरजताभ्यां च मणिमुक्ताप्रवालकैः ।
अलङ्कृत्य यथायोगं सपताकं सवेदिकम् ।
सभूषणं सवस्त्रं च शयनासनसंमितम्॥ ॥१३-२३६-५॥

प्रायशः कौमुदीमासे पौर्णमास्यां विशेषतः ।
भोजयित्वा च विधिवद्ब्राह्मणानर्हतो बहून्॥ ॥१३-२३६-६॥

स्वयं कृतोपवासश्च वृत्तशौचसमन्वितः ।
दद्यात्प्रदक्षिणीकृत्य तिलराशिं सदक्षिणम्॥ ॥१३-२३६-७॥

ब्रह्मदेयाग्रहारांश्च पुत्राणामौर्ध्वदेहिकम् ।
इतो रत्नानि गाश्चैव दासीदासमजाविकम्॥ ॥१५-१४-११॥

अर्चयित्वा कुरुश्रेष्ठो ब्राह्मणेभ्यः प्रयच्छतु ।
दीनान्धकृपणेभ्यश्च तत्रतत्र नृपाज्ञया॥ ॥१५-१४-१२॥

इत्युक्ते विदुरेणाथ धृतराष्ट्रोऽभिनन्द्य तान् ।
मनश्चक्रे महादाने कार्तिक्यां जनमेजय॥ ॥१५-१४-१५॥

ग्रामाग्रहारद्वीपाढ्यो मणिहेमजलार्णवः ।
गान्धार्याश्च महाराज प्रददावौर्ध्वदेहिकम्॥ ॥१५-१५-१५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

23 माघी — विरूपाक्ष का भोजन, ऋषियों का कौशिकी गमन

महाभारत

पंचांग विवरण

माघ पूर्णिमा: विरूपाक्ष का वार्षिक ब्राह्मण भोजन; तीर्थयात्रा में ऋषि और राजर्षि कौशिकी नदी पहुँचे; "आज माघी है, अश्वमेध में एक मास शेष है" कहकर युधिष्ठिर ने यज्ञभूमि देखने के लिए ब्राह्मण भेजे।

मूल श्लोक: म.भा. 12.170.17 · म.भा. 13.143.3 · म.भा. 13.143.6 · म.भा. 14.86.7

तस्य नित्यं सदाषाढ्यां माघ्यां च बहवो द्विजाः ।
ईप्सितं भोजनवरं लभन्ते सत्कृतं तथा॥ ॥१२-१७०-१७॥

पुरा प्रभासे ऋषयः समग्राः समेता वै मन्त्रममन्त्रयन्त ।
चराम सर्वां पृथिवीं पुण्यतीर्थां तन्नः कामं हन्त गच्छाम सर्वे॥ ॥१३-१४३-३॥

जग्मुः पुरस्कृत्य महानुभावं शतक्रतुं वृत्रहणं नरेन्द्राः ।
तीर्थानि सर्वाणि परिभ्रमन्तो माघ्यां ययुः कौशिकीं पुण्यतीर्थाम्॥ ॥१३-१४३-६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

उपस्थितश्च कालोऽयमभितो वर्तते हयः ।
माघी च पौर्णमासीयं मासः शेषो वृकोदर॥ ॥१४-८६-७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

24 आषाढ़ी — विरूपाक्ष का ब्राह्मण भोजन

महाभारत

पंचांग विवरण

आषाढ़ पूर्णिमा को विरूपाक्ष का वार्षिक ब्राह्मण भोजन।

मूल श्लोक: म.भा. 12.170.17

तस्य नित्यं सदाषाढ्यां माघ्यां च बहवो द्विजाः ।
ईप्सितं भोजनवरं लभन्ते सत्कृतं तथा॥ ॥१२-१७०-१७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

25 प्रौष्ठपदी — शर्करी गोदान

महाभारत

पंचांग विवरण

वर्षा ऋतु के अन्तिम मास की पूर्णिमा (भाद्रपद पूर्णिमा) — एक आंगिरस ने सुमित्र को शर्करी नाम की गाय दान की।

मूल श्लोक: म.भा. 13.120.12

तस्मा आङ्गिरसः कश्चिद्ददौ गां शर्करीं शुभाम् ।
वर्षासु पश्चिमे मासि पौर्णमास्यां शुचिव्रतः॥ ॥१३-१२०-१२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

26 इन्द्रध्वज पात (आश्विनी)

रामायण

पंचांग विवरण

आश्विन पूर्णिमा। गिरे हुए वाली की तुलना वाल्मीकि ने आश्विन पूर्णिमा को नीचे उतारे गए इन्द्रध्वज से की है — यह इस बात का साक्ष्य है कि वह उत्सव पूर्णिमा को होता था।

मूल श्लोक: रा. 4.16.37

इन्द्रध्वज इवोद्भूतः पौर्णमास्यां महीतले।
आश्वयुक्समये मासि गतश्रीको विचेतनः।
बाष्पसंरुद्धकण्ठस्तु वाली चार्तस्वरः शनैः॥ ॥४-१६-३७॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

27 आषाढ़ी — वर्षावास का आरम्भ

रामायण

पंचांग विवरण

आषाढ़ पूर्णिमा। बाहर के काम समाप्त कर, सामग्री जुटाकर गृहस्थ/राजा वर्षा ऋतु का नियम आरम्भ करता है — राम कहते हैं कि भरत ने ऐसा किया होगा।

मूल श्लोक: रा. 4.28.55

निवृत्तकर्मायतनो नूनं संचितसंचयः।
आषाढीमभ्युपगतो भरतः कोसलाधिपः॥ ॥४-२८-५५॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

भाग २ — व्रत, विधि-निषेध

प्रसिद्ध व्रत पहले; फिर मास, तिथि, नक्षत्र के नियम।

एकादशी – द्वादशी

28 द्वादशी पारण का नियम

भागवत

पंचांग विवरण

एकादशी व्रत का पारण द्वादशी के भीतर ही करना चाहिए; यदि द्वादशी समाप्त होने वाली हो तो केवल जल लेना पारण माना जाता है (अम्बरीष का निर्णय)। काल: प्रातःकाल।

मूल श्लोक: भा. 9.6.26 · भा. 9.6.27

मुहूर्तार्धावशिष्टायां द्वादश्यां पारणं प्रति।
चिन्तयामास धर्मज्ञो द्विजैस्तद्धर्मसङ्कटे॥ ॥९-६-२६॥

ब्राह्मणातिक्रमे दोषो द्वादश्यां यदपारणे।
यत् कृत्वा साधु मे भूयादधर्मो वा न मां स्पृशेत्॥ ॥९-६-२७॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

29 द्वादशी के नियम (हर मास)

महाभारत

पंचांग विवरण

हर द्वादशी: उपवास; विष्णु की गन्ध-पुष्प-फल-जल-पत्र-मूल से पूजा; विष्णु गायत्री या अष्टाक्षर जप; ब्राह्मणों को घी और अक्षत का दान; भक्तों को वैष्णवी अनुस्मृति सुनाना; बारह वर्ष का मासिक द्वादशी व्रत।

मूल श्लोक: म.भा. 12.210.71 · म.भा. 12.210.72 · म.भा. 13.192.6 · म.भा. 13.192.7 · म.भा. 13.192.8 · म.भा. 14.114.12 · म.भा. 14.114.14 · म.भा. 14.114.15 · म.भा. 14.114.16 · म.भा. 14.114.29 · म.भा. 14.114.31 · म.भा. 14.114.32 · म.भा. 14.114.33 · म.भा. 14.114.34 · म.भा. 14.115.27 · म.भा. 14.115.28 · म.भा. 14.115.29

इमामनुस्मृतिं दिव्यां वैष्णवीं सुसमाहितः ।
स्वपन्विबुद्धश्च पठेद्यत्र तत्र समभ्यसेत्॥ ॥१२-२१०-७१॥

पौर्णमास्याममावास्यां द्वादश्यां च विशेषतः ।
श्रावयेच्छ्रद्दधानांश्च मद्भक्तांश्च विशेषतः॥ ॥१२-२१०-७२॥

द्वादश्यां पौर्णमास्यां च मासिमासि घृताक्षतम् ।
ब्राह्मणेभ्यः प्रयच्छेत तस्य पुण्यं निबोधत॥ ॥१३-१९२-६॥

सोमश्च वर्धते तेन समुद्रश्च महोदधिः ।
अश्वमेधचतुर्भागं फलं सृजति वासवः॥ ॥१३-१९२-७॥

दानेनैतेन तेजस्वी वीर्यवांश्च भवेन्नरः ।
प्रीतश्च भगवान्सोम इष्टान्कामान्प्रयच्छति॥ ॥१३-१९२-८॥

यस्तु भक्त्या शुचिर्भूत्वा पञ्चम्यां मे नराधिप ।MM-KK-14-03-114-012c उपवासव्रतं कुर्यात्त्रिकालं चार्चयंस्तु माम् ।
सर्वक्रतुफलं लब्ध्वा मम लोके महीयते॥ ॥१४-११४-१२॥

भगवानुवाच ।
पर्वद्वयं च द्वादश्यां श्रवणं च नराधिप ।
मत्पञ्चमीति विख्यातां मत्प्रिया च विशेषतः॥ ॥१४-११४-१४॥

तस्मात्तु ब्राह्मणश्रेष्ठैर्मन्निवेशितबुद्धिभिः ।
उपवासस्तु कर्तव्यो मत्प्रियार्तं विशेषतः॥ ॥१४-११४-१५॥

द्वादश्यामेव वा कुर्यादुपवासमशक्नुवन् ।
तेनाहं परमां प्रीति यास्यामि नरपुङ्गव॥ ॥१४-११४-१६॥

केवलेनोपवासेन द्वादश्यां पाण्डुनन्दन ।
यत्फलं पूर्वमुद्दिष्टं तस्यार्धं लभते नृप॥ ॥१४-११४-२९॥

मासेमासे समभ्यर्च्य क्रमशो मामतन्द्रितः ।
पूर्णे संवत्सरे कुर्यात्पुनः संवत्सरं तु माम्॥ ॥१४-११४-३१॥

एवं द्वादशवर्षं यो मद्भक्तो मत्परायणः ।
अविघ्नमर्चयानस्तु मम सायुज्यमाप्नुयात्॥ ॥१४-११४-३२॥

अर्चयेत्प्रीतिमान्यो मां द्वादश्यां वेदसंहिताम् ।
स पूर्वोक्तफलं राजँल्लभते नात्र संशयः॥ ॥१४-११४-३३॥

गन्धं पुष्पं फलं तोयं पत्रं वा मूलमेव वा ।
द्वादश्यां मम यो दद्यात्तत्समो नास्ति मत्प्रियः॥ ॥१४-११४-३४॥

युधिष्ठिर उवाच ।
भगवंस्तव गायत्री जप्यते च कथं विभो ।
किं वा तस्य फलं देव ममाचक्ष्व सुरेश्वर॥ ॥१४-११५-२७॥

भगवानुवाच ।
द्वादश्यां विषुवे चैव चन्द्रसूर्यग्रहे तथा ।
अयने श्रवणे चैव व्यतीपाते तथैव च॥ ॥१४-११५-२८॥

अश्वत्तदर्शने चैव तथा मद्दर्शनेऽपि च ।
जप्या तु मम गायत्री चाथवाऽष्टाक्षरं नृप ।
आर्जितं दुष्कृतं तस्य नाशयेन्नात्र संशयः॥ ॥१४-११५-२९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

30 मार्गशीर्ष द्वादशी — केशव पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

मार्गशीर्ष मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की केशव नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.14 · म.भा. 13.171.15 · म.भा. 13.171.16 · म.भा. 14.114.17

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

द्वादश्यां कार्तिके मासि पूज्यो दामोदरेति च ।
गवां यज्ञमवाप्नोति पुमान्स्त्री वा न संशयः॥ ॥१३-१७१-१४॥

अर्चयेत्पुण्डरीकाक्षमेवं संवत्सरं तु यः ।
जातिस्मरत्वं प्राप्नोति विन्द्याद्बहु सुवर्णकम्॥ ॥१३-१७१-१५॥

अहन्यहनि तद्भावमुपेन्द्रं योऽधिगच्छति ।
समाप्ते भोजयेद्विप्रानथवा दापयेद्धृतम्॥ ॥१३-१७१-१६॥

अहोरात्रेण द्वादश्यां मार्गशीर्षेण केशवम् ।
उपोष्य पूजयेद्यो मां सोऽस्वमेधफलं लभेत्॥ ॥१४-११४-१७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

31 पौष द्वादशी — नारायण पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

पौष मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की नारायण नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.4 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.18

तथैव पौषमासे तु पूज्यो नारायणेति च ।
वाजपेयमवाप्नोति सिद्धिं च परमां व्रजेत्॥ ॥१३-१७१-४॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यां पुष्यमासे तु नाम्ना नारायणं तु माम् ।
उपोष्य पूजयेद्यो मां वाजिमेधफलं लभेत्॥ ॥१४-११४-१८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

32 माघ द्वादशी — माधव पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

माघ मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की माधव नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.5 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.19

अहोरात्रेण द्वादश्यां माघमासे तु माधवम् ।
राजसूयमवाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत्॥ ॥१३-१७१-५॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यां माघमासे तु मामुपोष्य तु माधवम् ।
पूजयेद्यः समाप्नोति राजसूयफलं नृप॥ ॥१४-११४-१९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

33 फाल्गुन द्वादशी — गोविन्द पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

फाल्गुन मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की गोविन्द नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.6 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.20

तथैव फाल्गुने मासि गोविन्देति च पूजयन् ।
अतिरात्रमवाप्नोति सोमलोकं च गच्छति॥ ॥१३-१७१-६॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यां फाल्गुने मासि गोविन्दाख्यमुपोष्य माम् ॥
पूजयेद्यः समाप्नोति ह्यतिरात्रफलं नृप॥ ॥१४-११४-२०॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

34 चैत्र द्वादशी — विष्णु पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

चैत्र मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की विष्णु नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.7 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.21

अहोरात्रेण द्वादश्यां चैत्रे विष्णुरिति स्मरन् ।
पौण्डरीकमवाप्नोति देवलोकं च गच्छति॥ ॥१३-१७१-७॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यां मासि चैत्रे तु मां विष्णुं समुपोष्य यः ।
पूजयंस्तदवाप्नोति पौण्डरीकस्य यत्फलम्॥ ॥१४-११४-२१॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

35 वैशाख द्वादशी — मधुसूदन पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

वैशाख मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की मधुसूदन नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.8 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.22

वैशाखमासे द्वादश्यां पूजयन्मधुसूदनम् ।
अग्निष्टोममवाप्नोति सोमलोकं च गच्छति॥ ॥१३-१७१-८॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यां मासि वैशाखे मधुसूदनसञ्ज्ञितम् ।
उपोष्य पूजयेद्यो मां सोग्निष्टोमस्य पाण्डव॥ ॥१४-११४-२२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

36 ज्येष्ठ द्वादशी — त्रिविक्रम पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

ज्येष्ठ मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की त्रिविक्रम नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.9 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.23

अहोरात्रेण द्वादश्यां ज्येष्ठे मासि त्रिविक्रमम् ।
गवां मेधमवाप्नोति अप्सरोभिश्च मोदते॥ ॥१३-१७१-९॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यां ज्येष्ठमासे तु मामुपोष्य त्रिविक्रमम् ।
अर्ययेद्यः समाप्नोति गवां मेधफलं नृप॥ ॥१४-११४-२३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

37 आषाढ़ द्वादशी — वामन पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

आषाढ़ मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की वामन नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.10 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.24

आषाढे मासि द्वादश्यां वामनेति च पूजयन् ।
नरमेधमवाप्नोति पुण्यं च लभते महत्॥ ॥१३-१७१-१०॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

आषाढे वामनाख्यं मां द्वादश्यां समुपोष्य यः ।
नरमेधस्य स फलं प्राप्नोति भरतर्षभ॥ ॥१४-११४-२४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

38 श्रावण द्वादशी — श्रीधर पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

श्रावण मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की श्रीधर नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)। श्रावण द्वादशी को विशेष विष्णु पूजा (14.114.30) भी।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.11 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.25 · म.भा. 14.114.30

अहोरात्रेण द्वादश्यां श्रावणे मासि श्रीधरम् ।
पञ्चयज्ञानवाप्नोति विमानस्थश्च मोदते॥ ॥१३-१७१-११॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यां श्रावणे मासि श्रीधराख्यमुपोष्य माम् ।
पूजयेद्य समाप्नोति पञ्चयज्ञफलं नृप॥ ॥१४-११४-२५॥

श्रावणेऽप्येवमेवं मामर्चयेद्भक्तिमान्नरः ।
मम सालोक्यमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥ ॥१४-११४-३०॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

39 भाद्रपद द्वादशी — हृषीकेश पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

भाद्रपद मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की हृषीकेश नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.12 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.26

तथा भाद्रपदे मासि हृषीकेशेति पूजयन् ।
सौत्रामणिमवाप्नोति पूतात्मा भवते च हि॥ ॥१३-१७१-१२॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

मासे भाद्रपदे यो मां हृषीकेशाख्यमर्चयेत् ।
उपोष्य स समाप्नोति सौत्रामणिफलं नृप॥ ॥१४-११४-२६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

40 आश्विन द्वादशी — पद्मनाभ पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

आश्विन मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की पद्मनाभ नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.13 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.27

द्वादश्यामाश्विने मासि पद्मनाभेति चार्चयन् ।
गोसहस्रफलं पुण्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-१३॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यामाश्वयुङ्मासे पद्मनाभमुपोष्य माम् ।
अर्चयेद्यः समाप्नोति गोसहस्रफलं नृप॥ ॥१४-११४-२७॥

41 कार्तिक द्वादशी — दामोदर पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक मास में द्वादशी (पक्ष नहीं बताया, अतः दोनों द्वादशियाँ)। उपवास करके विष्णु की दामोदर नाम से पूजा करें (अनुशासन पर्व 13.171; आश्वमेधिक पर्व 14.114)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.171.14 · म.भा. 13.171.1 · म.भा. 13.171.2 · म.भा. 14.114.28

द्वादश्यां कार्तिके मासि पूज्यो दामोदरेति च ।
गवां यज्ञमवाप्नोति पुमान्स्त्री वा न संशयः॥ ॥१३-१७१-१४॥

[*युधिष्ठिर उवाच
सर्वेषामुपवासानां यच्छ्रेयः सुमहत्फलम् ।
यच्चाप्यसंशयं लोके तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि॥ ॥१३-१७१-१॥

भीष्म उवाच
शृणु राजन्यथा गीतं स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
यत्कृत्वा निर्वृतो भूयात्पुरुषो नात्र संशयः॥ ॥१३-१७१-२॥

द्वादश्यां कार्तिके मासि मां दामोदरसञ्ज्ञितम् ।
उपोष्य पूजयेद्यस्तु सर्वक्रतुफलं नृप॥ ॥१४-११४-२८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

42 कृष्ण एकादशी उपवास, द्वादशी पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

हर कृष्ण पक्ष की एकादशी को उपवास, अगले दिन द्वादशी को विष्णु पूजा — दो दिन का व्रत।

मूल श्लोक: म.भा. 14.114.49 · म.भा. 14.114.50 · म.भा. 14.114.51 · म.भा. 14.114.52

इदं च धर्मसम्पन्नं वक्तुमर्हसि माधव ।
कृष्णपक्षेषु द्वादश्यामर्चनीयः कथं भवेत्॥ ॥१४-११४-४९॥

भगवानुवाच ।
शृणु राजन्यथापूर्वं तत्सर्वं कथयामि ते ।
परमं कृष्णद्वादश्यामर्चनायां फलं मम॥ ॥१४-११४-५०॥

एकादश्यामुपोष्याथ द्वादश्यामर्चयेत्तु माम् ।
विप्रानपि यथालाभं पूजयेद्भक्तिमान्नरः॥ ॥१४-११४-५१॥

स गच्छेद्दक्षिणामूर्तिं मां वा नात्र विचारणा ।
चन्द्रसालोक्यमथवा ग्रहनक्षत्रपूजितः॥ ॥१४-११४-५२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

43 एकादशी-द्वादशी को भागवत श्रवण

भागवत

पंचांग विवरण

एकादशी या द्वादशी को उपवास और इन्द्रियसंयम के साथ भागवत सुनना/पढ़ना — आयु और पवित्रता।

मूल श्लोक: भा. 12.12.59

द्वादश्यामेकदश्यां वा शृण्वन्नायुष्यवान् भवेत्।
पठन्ननश्नन् प्रयतः पूतो भवति पातकी॥ ॥१२-१२-५९॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

पयोव्रत

44 पयोव्रत से पूर्व स्नान (सिनीवाली)

भागवत

पंचांग विवरण

फाल्गुन शुक्ल पयोव्रत से पहले आने वाली सिनीवाली (माघ अमावस्या) को, वराह द्वारा खोदी गई मिट्टी लगाकर स्नान।

मूल श्लोक: भा. 8.15.26

सिनीवाल्यां मृदालिप्य स्नायात् क्रोडविदीर्णया।
यदि लभ्येत वै स्रोतस्येतं मन्त्रमुदीरयेत्॥ ॥८-१५-२६॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

45 अदिति के पयोव्रत का समापन

भागवत

पंचांग विवरण

अदिति द्वारा किया गया पयोव्रत फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा से त्रयोदशी तक (13 दिन) — त्रयोदशी को व्रत समाप्ति।

मूल श्लोक: भा. 8.15.48 · भा. 8.15.50

हरेराराधनं होममर्हणं द्विजतर्पणम्।
प्रतिपद्दिनमारभ्य यावच्छुक्लत्रयोदशी॥ ॥८-१५-४८॥

अहिंस्रः सर्वभूतानां वासुदेवपरायणः।
त्रयोदश्यामथो विष्णोः स्नापनं स्नापकैर्विभोः॥ ॥८-१५-५०॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

पूर्णिमा के स्नान और दान

46 कार्तिक पूर्णिमा स्नान

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिकी को पुष्कर तीर्थ; कार्तिकी आने पर सरस्वती तट पर शशयान तीर्थ में स्नान।

मूल श्लोक: म.भा. 3.80.32 · म.भा. 3.80.37 · म.भा. 3.80.115

कार्तिक्यां तु विशेषेण योऽभिगच्छति पुष्करम् ।
`फलं तत्राक्षयं तेन लभते भरतर्षभ' ॥ ॥३-८०-३२॥

यस्तु वर्षशतं पूर्णमग्निहोत्रमुपासते ।
कार्तिकीं वा वसेदेकां पुष्करे सममेव तत्॥ ॥३-८०-३७॥

सरस्वत्यां महाराज शतं संवत्सरं च ते ।
दृश्यन्ते भरतश्रेष्ठ वृत्तां वै कार्तिकीं सदा॥ ॥३-८०-११५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

47 माघ पूर्णिमा स्नान

महाभारत

पंचांग विवरण

माघी को, और माघ मास भर, प्रयाग में स्नान।

मूल श्लोक: म.भा. 13.64.37 · म.भा. 13.64.38

दशतीर्थसहस्राणि तिस्रः कोट्यस्तथाऽपराः ।
समागच्छन्ति माघ्यां तु प्रयागे भरतर्षभ॥ ॥१३-६४-३७॥

माघमासं प्रयागे तु नियतः संशितव्रतः ।
स्नात्वा तु भरतश्रेष्ठ निर्मलः स्वर्गमाप्नुयात्॥ ॥१३-६४-३८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

48 वैशाख पूर्णिमा के दान

महाभारत

पंचांग विवरण

वैशाख पूर्णिमा: द्विजों को तिल का दान; यम के उद्देश्य से गुड़ सहित तिल; ब्राह्मण भोजन, जल से भरे पात्रों का दान।

मूल श्लोक: म.भा. 13.103.18 · म.भा. 13.103.19 · म.भा. 14.103.79 · म.भा. 14.103.80 · म.भा. 14.103.81 · म.भा. 14.103.82 · म.भा. 14.103.83

वैशाख्यां पौर्णमास्यां तु तिलान्दद्याद्द्विजातिषु ।
तिला भक्षयितव्याश्च सदा त्वालम्भनं च तैः ॥ ॥१३-१०३-१८॥

कार्यं सततमिच्छद्भिः श्रेयः सर्वात्मना गृहे ।
तथाऽऽपः सर्वदा देयाः पेयाश्चैव न संशयः॥ ॥१३-१०३-१९॥

वैशाखे मासि वैशाखे दिवसे पाण्डुनन्दन ।
वैवस्वतं समुद्दिश्य परां भक्तिमुपागताः॥ ॥१४-१०३-७९॥

अभ्यर्च्य विधिवद्विप्रांस्तिलान्गुडसमन्वितान् ।
ये प्रयच्छन्ति विप्रेभ्यस्तेषां पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-१०३-८०॥

गोप्रदानेन यत्पुण्यं विधिवत्पाण्डुनन्दन ।
तत्पुण्यं समनुप्राप्तो यमलोके महीयते ।
ततश्चापि च्युतः कालादिह राजा भविष्यति॥ ॥१४-१०३-८१॥

तस्मिन्नेव दिने विप्रान्भोजयित्वा सुदक्षिणम् ।
तोयपूर्णानि दिव्यानि भाजनानि दिशन्ति ये॥ ॥१४-१०३-८२॥

ते यान्त्यादित्यवर्णाभैर्विमानैर्वरुणालयम् ।
तत्र दिव्याङ्गनाभिस्तु रमन्ते कामकामिनः॥ ॥१४-१०३-८३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

49 भागवत दान (प्रौष्ठपदी)

भागवत

पंचांग विवरण

भाद्रपद पूर्णिमा को स्वर्ण सिंहासन सहित भागवत ग्रन्थ का दान करने से परम गति।

मूल श्लोक: भा. 12.13.12

प्रौष्ठपद्यां पौर्णमास्यां हेमसिंहसमन्वितम्।
ददाति यो भागवतं स याति परमां गतिम्॥ ॥१२-१३-१२॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

50 श्रवण व्रत

महाभारत

पंचांग विवरण

श्रवण नक्षत्र के दिन उपवास और जप (वैष्णव धर्म)।

मूल श्लोक: म.भा. 14.114.14 · म.भा. 14.114.15 · म.भा. 14.115.28

भगवानुवाच ।
पर्वद्वयं च द्वादश्यां श्रवणं च नराधिप ।
मत्पञ्चमीति विख्यातां मत्प्रिया च विशेषतः॥ ॥१४-११४-१४॥

तस्मात्तु ब्राह्मणश्रेष्ठैर्मन्निवेशितबुद्धिभिः ।
उपवासस्तु कर्तव्यो मत्प्रियार्तं विशेषतः॥ ॥१४-११४-१५॥

भगवानुवाच ।
द्वादश्यां विषुवे चैव चन्द्रसूर्यग्रहे तथा ।
अयने श्रवणे चैव व्यतीपाते तथैव च॥ ॥१४-११५-२८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

51 श्रवण नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास श्रवण नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)। श्रवण के दिन स्त्री-संग वर्जित (14.106.108)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.28 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.11 · म.भा. 14.106.108

श्रवणे कम्बलं दत्त्वा वस्त्रान्तरितमेव वा ।
श्वेतेन याति यानेन स्वर्गलोकानसंवृतान्॥ ॥१३-९९-२८॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

श्राद्धं त्वभिजितौ कुर्वन्विद्यां श्रेष्ठामवाप्नुयात् ।
श्रवणेषु ददच्छ्राद्धं प्रेत्य गच्छेत्स तद्गतिम्॥ ॥१३-१३६-११॥

पर्वद्वये चतुर्दश्यामष्टम्यां सन्ध्ययोर्द्वयोः ।
आर्द्रायां जन्मनक्षत्रे विषुवे श्रवणेऽथवा ।
ये ग्राम्यधर्मविरतास्ते नराः स्वर्गगाप्तिनः॥ ॥१४-१०६-१०८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

52 श्रवण के दिन ध्रुव चरित कथन

भागवत

पंचांग विवरण

श्रवण नक्षत्र के दिन श्रद्धालुओं को ध्रुव का चरित सुनाएँ।

मूल श्लोक: भा. 4.12.48 · भा. 4.12.49

पौर्णमास्यां सिनीवाल्यां द्वादश्यां श्रवणेऽथ वा।
दिनक्षये व्यतीपाते संक्रमेऽर्कदिनेऽपि वा॥ ॥४-१२-४८॥

श्रावयेच्छ्रद्दधानानां तीर्थपादपदाश्रयः।
नेच्छंस्तत्राऽत्मनाऽऽत्मानं सन्तुष्ट इति सिध्यति॥ ॥४-१२-४९॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

पूर्णिमा, अमावस्या, पर्व

53 अमावस्या के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर अमावस्या: पिण्डान्वाहार्यक श्राद्ध (पितर तृप्त होते हैं, कामनाएँ पूरी होती हैं); उदुम्बर पात्र में मधु सहित तिलोदक; ब्रह्मचर्य; दातुन न करें; वृक्ष या पत्ते न तोड़ें; प्रभास तीर्थ में एक रात्रि निवास।

मूल श्लोक: म.भा. 13.61.34 · म.भा. 13.64.55 · म.भा. 13.134.6 · म.भा. 13.134.7 · म.भा. 13.134.8 · म.भा. 13.134.19 · म.भा. 13.161.30 · म.भा. 13.161.40 · म.भा. 13.188.70 · म.भा. 13.188.71 · म.भा. 13.188.78 · म.भा. 13.188.79 · म.भा. 13.190.3 · म.भा. 13.190.4 · म.भा. 13.190.5 · म.भा. 13.238.8

श्राद्धस्य ब्राह्मणः कालः प्राप्तं दधि घृतं तथा ।
सोमक्षयश्च मांसं च यदारण्यं युधिष्ठिर॥ ॥१३-६१-३४॥

प्रभासे त्वेकरात्रेण अमावास्यां ममाहितः ।
सिद्ध्यते तु महाबाहो यो नरो जायतेऽमरः॥ ॥१३-६४-५५॥

अन्वाहार्यं महाराज पितॄणां श्राद्धमुच्यते ।
तस्माद्विशेषविधिना विधिः प्रथमकल्पितः॥ ॥१३-१३४-६॥

सर्वेष्वहःसु प्रीयन्ते कृते श्राद्धे पितामहाः ।
'पिण्डान्वाहार्यकं श्राद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम् ।
पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य विप्रश्चन्द्रक्षयेऽग्निमान्॥ ॥१३-१३४-७॥

पिण्डानां मासिकश्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्बुधाः ।
तदामिषेण कुर्वीत प्रयतः प्राञ्जलिः शुचिः ॥' ॥१३-१३४-८॥

अमावास्यां तु निवपन्सर्वकामानवाप्नुयात्॥ ॥१३-१३४-१९॥

अमावास्यां पौर्णमास्यां चतुर्दश्यां च जन्मनि ।
अष्टम्यामथ द्वादश्यां ब्रह्मचारी सदा भवेत्॥ ॥१३-१६१-३०॥

'अमावास्यामृते नित्यं दन्तधावनमाचरेत् ।
इतिहासपुराणानि दानं वेदं च नित्यशः ।
गायत्रीमननं नित्यं कुर्यात्सन्ध्यां समाहितः ॥'॥ ॥१३-१६१-४०॥

नीलषण्डप्रमोक्षेण अमावास्यां तिलोदकैः ।
वर्षासु दीपकैश्चैव पितॄणामनृणो भवेत्॥ ॥१३-१८८-७०॥

अक्षयं निर्व्यलीकं च दानमेतन्महाफलम् ।
अस्माकं परितोषश्च अक्षयः परिकीर्त्यते॥ ॥१३-१८८-७१॥

अमावास्यां तु ये मर्त्याः प्रयच्छन्ति तिलोदकम् ।
पात्रमौदुम्बरं गृह्य मधुमिश्रं तपोधन ।
कृतं भवति तैः श्राद्धं सरहस्यं यथार्थवत्॥ ॥१३-१८८-७८॥

हृष्टपुष्टमनास्तेषां प्रजा भवति नित्यदा ।
कुलवंशस्य वृद्धिस्तु पिण्डदस्य फलं भवेत् ।
श्रद्दधानस्तु यः कुर्यात्पितॄणामनृणो भवेत्॥ ॥१३-१८८-७९॥

वनस्पतिं च यो हन्यादमावास्यामबुद्धिमान् ।
अपि ह्येकेन पत्रेण लिप्यते ब्रह्महत्यया॥ ॥१३-१९०-३॥

दन्तकाष्ठं तु यः खादेदमावास्यामबुद्धिमान् ।
हिंसितश्चन्द्रमास्तेन पितरश्चोद्विजन्ति च॥ ॥१३-१९०-४॥

हव्यं न तस्य देवाश्च प्रतिगृह्णन्ति पर्वसु ।
कुप्यन्ते पितरश्चास्य कुले वंशोऽस्य हीयते॥ ॥१३-१९०-५॥

अमावास्यां त्रयोदश्यां नवम्यां प्रतिपत्सु च ।
तिथिष्वेतासु तुष्यन्ति दत्तेनेह पितामहाः॥ ॥१३-२३८-८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

54 पूर्णिमा के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर पूर्णिमा: उपवास / एकभुक्त; पंचगव्य प्राशन; दान (पर्वों में श्रेष्ठ); ब्राह्मणों को घी-अक्षत का दान; तीन दिन उपवास के बाद तीर्थस्नान; वैष्णवी अनुस्मृति का श्रवण; स्त्री-संग वर्जित।

मूल श्लोक: म.भा. 12.210.71 · म.भा. 12.210.72 · म.भा. 13.163.14 · म.भा. 13.163.15 · म.भा. 13.192.6 · म.भा. 13.192.7 · म.भा. 13.192.8 · म.भा. 13.233.60 · म.भा. 13.233.61 · म.भा. 13.233.62 · म.भा. 13.233.64 · म.भा. 13.234.20 · म.भा. 13.234.21 · म.भा. 13.234.23 · म.भा. 13.234.24 · म.भा. 14.106.108 · म.भा. 14.114.12 · म.भा. 14.114.14 · म.भा. 14.114.15 · म.भा. 14.115.61 · म.भा. 14.115.62 · म.भा. 14.115.63 · म.भा. 14.115.64

इमामनुस्मृतिं दिव्यां वैष्णवीं सुसमाहितः ।
स्वपन्विबुद्धश्च पठेद्यत्र तत्र समभ्यसेत्॥ ॥१२-२१०-७१॥

पौर्णमास्याममावास्यां द्वादश्यां च विशेषतः ।
श्रावयेच्छ्रद्दधानांश्च मद्भक्तांश्च विशेषतः॥ ॥१२-२१०-७२॥

पञ्चम्यां वाऽपि षष्ठ्यां च पौर्णमास्यां च भारत ।
उपोष्य एकभक्तेन नियतात्मा जितेन्द्रियः॥ ॥१३-१६३-१४॥

क्षमावान्नूपसम्पन्नः सुरभिश्चैव जायते ।
नानपत्यो भवेत्प्राज्ञो दरिद्रो वा कदाचन॥ ॥१३-१६३-१५॥

द्वादश्यां पौर्णमास्यां च मासिमासि घृताक्षतम् ।
ब्राह्मणेभ्यः प्रयच्छेत तस्य पुण्यं निबोधत॥ ॥१३-१९२-६॥

सोमश्च वर्धते तेन समुद्रश्च महोदधिः ।
अश्वमेधचतुर्भागं फलं सृजति वासवः॥ ॥१३-१९२-७॥

दानेनैतेन तेजस्वी वीर्यवांश्च भवेन्नरः ।
प्रीतश्च भगवान्सोम इष्टान्कामान्प्रयच्छति॥ ॥१३-१९२-८॥

जन्मना व्रतभूयिष्ठो गत्वा तीर्थानि काङ्क्षया ।
उपवासत्रयं कुर्यादिकं वा नियमान्वितः॥ ॥१३-२३३-६०॥

पुण्यमासेवते काले पौर्णमास्यां यथाविधि ।
बहिरेव शुचिर्भूत्वा तत्तीर्थं मन्मना विशेत्॥ ॥१३-२३३-६१॥

त्रिराप्लुत्य जलाभ्याशे दत्त्वा ब्राह्मणदक्षिणाम् ।
अभ्यर्च्य देवायतनं ततः प्रायाद्यथागतम्॥ ॥१३-२३३-६२॥

आदिप्रभृतिशुद्धस्य तीर्थस्नानं शुभं भवेत् ।
तपोर्थं पापनाशार्थं शौचार्थं तीर्थगाहनम्॥ ॥१३-२३३-६४॥

यथा सम्भाषितं पूर्वं दातव्यं तत्तथैव च ।
पुण्यक्षेत्रेषु यद्दत्तं पुण्यकालेषु वा यथा ।
तच्छोभनतरं विद्धि गौरवाद्देशकालयोः॥ ॥१३-२३४-२०॥

उमोवाच ।
यश्च पुण्यतमो देशस्तथा कालश्च शंस मे॥ ॥१३-२३४-२१॥

शरद्वसन्तकालश्च पुण्यमासस्तथैव च ।
शुक्लपक्षश्च पक्षाणां पौर्णमासी च पर्वसु॥ ॥१३-२३४-२३॥

पितृदैवतनक्षत्रनिर्मलो दिवसस्तथा ।
तच्छोभनतरं विद्धि चन्द्रसूर्यग्रहे तथा॥ ॥१३-२३४-२४॥

पर्वद्वये चतुर्दश्यामष्टम्यां सन्ध्ययोर्द्वयोः ।
आर्द्रायां जन्मनक्षत्रे विषुवे श्रवणेऽथवा ।
ये ग्राम्यधर्मविरतास्ते नराः स्वर्गगाप्तिनः॥ ॥१४-१०६-१०८॥

यस्तु भक्त्या शुचिर्भूत्वा पञ्चम्यां मे नराधिप ।MM-KK-14-03-114-012c उपवासव्रतं कुर्यात्त्रिकालं चार्चयंस्तु माम् ।
सर्वक्रतुफलं लब्ध्वा मम लोके महीयते॥ ॥१४-११४-१२॥

भगवानुवाच ।
पर्वद्वयं च द्वादश्यां श्रवणं च नराधिप ।
मत्पञ्चमीति विख्यातां मत्प्रिया च विशेषतः॥ ॥१४-११४-१४॥

तस्मात्तु ब्राह्मणश्रेष्ठैर्मन्निवेशितबुद्धिभिः ।
उपवासस्तु कर्तव्यो मत्प्रियार्तं विशेषतः॥ ॥१४-११४-१५॥

पिबेत्तु पञ्चगव्यं यः पौर्णमास्यामुपोष्य तु ।
तस्य नश्यति यत्पापं तत्पापं पूर्वसञ्चितम्॥ ॥१४-११५-६१॥

तथैव ब्रह्मकूर्चं तु समन्त्रं तु पृथक्पृथक् ।
मासिमासि विबेद्यस्तु तस्य पापं प्रणश्यति॥ ॥१४-११५-६२॥

पात्रं च ब्रह्मकूर्चं च शृणु तत्र च भारत ।
पालाशं पद्मपत्रं च ताम्रं वाऽथ हिरण्ययम् ।
सादयित्वा तु गृह्णीयात्तत्तु पात्रमुदाहृतम्॥ ॥१४-११५-६३॥

गायत्र्या गृह्यते मूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम् ।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राण्वेति वै दधि॥ ॥१४-११५-६४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

55 पूर्णिमा को चन्द्रोदय पर बलि

महाभारत

पंचांग विवरण

पूर्णिमा के प्रदोष (चन्द्रोदय) में: चन्द्रमा को जल और अक्षत की बलि; उदुम्बर पात्र में मधु सहित अन्न की बलि।

मूल श्लोक: म.भा. 13.190.1 · म.भा. 13.190.2 · म.भा. 13.197.4 · म.भा. 13.197.5 · म.भा. 13.197.6

[विभावसुरुवाच
सलिलस्याञ्जलिं पूर्णमक्षताश्च धृतोत्तराः ।
सोमस्योत्तिष्ठमानस्य तज्जलं चाक्षतांश्च तान्॥ ॥१३-१९०-१॥

स्थितो ह्यभिमुखो मर्त्यः पौर्णमास्यां बलिं हरेत् ।
अग्निकार्यं कृतं तेन हुताश्चास्याग्नयस्त्रयः॥ ॥१३-१९०-२॥

प्रगृह्यौदुम्बरं पात्रं पक्वान्नं मधुना सह ।
सोमस्योत्तिष्ठमानस्य पौर्णमास्यां बलिं हरेत्॥ ॥१३-१९७-४॥

तस्य धर्मफलं नित्यं श्रद्दधाना निबोधत ।
साध्या रुद्रास्तथाऽऽदित्या विश्वेदेवास्तथाऽश्विनौ ||॥ ॥१३-१९७-५॥

मरुतो वसवश्चैव प्रतिगृह्णन्ति तं बलिम् ।
सोमश्च वर्धते तेन समुद्रश्च महोदधिः॥ ॥१३-१९७-६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

56 पर्व के नियम (पूर्णिमा, अमावस्या)

महाभारत

पंचांग विवरण

पर्व = पूर्णिमा और अमावस्या (13.161.135 और 14.106.108 में पर्वों को अष्टमी, चतुर्दशी से अलग गिनाया गया है)। पर्व के दिनों में: ब्रह्मचर्य; मांस, तेल, दातुन का त्याग; वृक्ष, ओषधि, घास न काटें; स्नान, अलंकार, उपवास; दान का दुगुना फल; भिक्षा, बलि, श्राद्ध, स्थालीपाक; दर्श-पौर्णमास इष्टि; महाभारत, धुन्धुमार उपाख्यान, भूमि पर्व, वृत्रवध, सुपर्ण-नारायण कथा आदि सुनना/सुनाना; राजा के लिए पक्षसन्धियों पर महाशान्ति; अमावस्या और पूर्णिमा को केशव की आराधना महाफलदायी (शास्त्रि-वाविल्ल, भाण्डारकर प्रतियाँ); आश्रमवासिक पर्व (पुत्रदर्शन) की कथा पर्वों पर सुनना (केवल शास्त्रि-वाविल्ल प्रति)।

मूल श्लोक: म.भा. 1.1.295 · म.भा. 1.1.296 · म.भा. 1.62.39 · म.भा. 3.203.124 · म.भा. 3.203.125 · म.भा. 3.203.126 · म.भा. 3.207.42 · म.भा. 3.207.43 · म.भा. 3.234.35 · म.भा. 3.234.36 · म.भा. 3.234.37 · म.भा. 6.12.48 · म.भा. 6.12.49 · म.भा. 6.12.50 · म.भा. 12.73.10 · म.भा. 12.73.14 · म.भा. 12.235.43 · म.भा. 12.235.52 · म.भा. 12.235.72 · म.भा. 12.275.20 · म.भा. 12.288.38 · म.भा. 12.288.40 · म.भा. 12.288.42 · म.भा. 12.288.65 · म.भा. 13.44.3 · म.भा. 13.52.11 · म.भा. 13.59.2 · म.भा. 13.59.4 · म.भा. 13.78.29 · म.भा. 13.143.52 · म.भा. 13.143.53 · म.भा. 13.161.46 · म.भा. 13.161.94 · म.भा. 13.161.135 · म.भा. 13.185.25 · म.भा. 13.189.34 · म.भा. 13.189.35 · म.भा. 13.189.36 · म.भा. 13.190.6 · म.भा. 13.190.7 · म.भा. 13.190.12 · म.भा. 13.190.13 · म.भा. 13.190.14 · म.भा. 13.197.8 · म.भा. 13.197.12 · म.भा. 13.197.13 · म.भा. 13.233.14 · म.भा. 13.233.49 · म.भा. 13.233.50 · म.भा. 13.233.51 · म.भा. 18.5.40 · म.भा. 6.62.20 · म.भा. 15.37.34

भ्रूणहत्यादिकं चापि पापं जह्यादसंशयम् ।
य इमं शुचिरध्यायं पठेत्पर्वणि पर्वणि॥ ॥१-१-२९५॥

अधीतं भारतं तेन कृत्स्नं स्यादिति मे मतिः ।
यश्चैनं शृणुयान्नित्यमार्षं श्रद्धासमन्वितः॥ ॥१-१-२९६॥

य इदं श्रावयेद्विद्वान्ब्राह्मणानिह पर्वसु ।
धूतपाप्मा जितस्वर्गो ब्रह्म गच्छति शाश्वतम्॥ ॥१-६२-३९॥

पर्वसु द्विगुणं दानमृतौ दशगुणं भवेत् ।
`अब्दे दशगुणं प्रोक्तमनन्तं विषुवे भवेत्' ॥ ॥३-२०३-१२४॥

अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखेषु च ।
चन्द्रसूर्योपरागे च दत्तमक्षयमुच्यते॥ ॥३-२०३-१२५॥

ऋतुषु दशगुणं वदन्ति दत्तं शतगुणमृत्वयनादिषु ध्रुवम् ।
भवति सहस्रगुणं दिनस्य राहोर्विषुवति चाक्षयमश्नुते फलम्॥ ॥३-२०३-१२६॥

इदं तु पुण्यमाख्यानं विष्णोः समनुकीर्तनम् ।
शृणुयाद्यः स धर्मात्मा पुत्रवांश्च भवेन्नरः॥ ॥३-२०७-४२॥

आयुष्मान्भूतिमांश्चैव श्रुत्वा भवति पर्वसु ।
न च व्याधिभयं किञ्चित्प्राप्नोति विगतज्वरः॥ ॥३-२०७-४३॥

ये च धर्माः कुटुम्बेषु श्वश्र्वामे कथिताः पुरा ।
`अनुतिष्ठामि तान्सत्ये नित्यकालमतन्द्रिता'॥ ॥३-२३४-३५॥

भिक्षाबलिश्राद्धविधिस्थालीपाकाश्च पर्वसु ।
मान्यानां मानसत्कारा ये चान्ये विदिता मम॥ ॥३-२३४-३६॥

तान्सर्वाननुवर्तामि दिवारात्रमतन्द्रिता ।
विनयान्नियमांश्चैव सदा सर्वात्मना श्रिता॥ ॥३-२३४-३७॥

तस्मादाश्वस कौरव्य पुत्रं दुर्योधनं प्रति ।
श्रुत्वेदं भरतश्रेष्ठ भूमिपर्व मनोनुगम्॥ ॥६-१२-४८॥

श्रीमान्भवति राजन्यः सिद्धार्थः साधुसम्मतः ।
आयुर्बलं च कीर्तिश्च तस्य तेजश्च वर्धते॥ ॥६-१२-४९॥

यः शृणोति महीपाल पर्वणीदं यतव्रतः ।
प्रीयन्ते पितरस्तस्य तथैव च पितामहाः॥ ॥६-१२-५०॥

पक्षसंधिषु कुर्वीत महाशान्तिं पुरोहितः ।
रौद्रहोमसहस्रं च स्वस्य राज्ञः प्रियं हितम्॥ ॥१२-७३-१०॥

रौद्रैर्होमैर्महाशान्त्या घृतकम्बलकर्मणा ।
भृग्वङ्गिरोविधिज्ञो वै पुरोधा निर्णुदे मलात्॥ ॥१२-७३-१४॥

नित्यं पर्वसु सुस्नाताः स्वनुलिप्ताः स्वलङ्कृताः ।
उपवासतपःशीलाः प्रतीता ब्रह्मवादिनः॥ ॥१२-२३५-४३॥

नैवाकाशे न पशुषु नायोनौ च न पर्वसु ।
इन्द्रियस्य विसर्गं ते रोचयन्ति कदाचन॥ ॥१२-२३५-५२॥

यज्ञियाश्च तथा वृक्षास्तेषामासन्दुरात्मनाम् ।
कूपस्नानरता नित्यं पर्वमैथुनगामिनः॥ ॥१२-२३५-७२॥

कपिल उवाच
दर्शश्च पूर्णमासश्च अग्निहोत्रं च धीमताम् ।
चातुर्मास्यानि चैवासंस्तेषु यज्ञः सनातनः॥ ॥१२-२७५-२०॥

ततो वृक्षौषधितृणं तथैवोक्तं यथातथम् ।
व्यथितं वह्निवद्राजन्ब्रह्माणमिदमब्रवीत्॥ ॥१२-२८८-३८॥

वयमग्निं तथा शीतं वर्षं च पवनेरितम् ।
सहामः सततं देव तथा च्छेदनभेदने॥ ॥१२-२८८-४०॥

ब्रह्मोवाच
पर्वकाले तु सम्प्राप्ते यो वै छेदनभेदनम् ।
करिष्यति नरो मोहात्तमेषाऽनुगमिष्यति॥ ॥१२-२८८-४२॥

ये तु शक्रकथां दिव्यामिमां पर्वसुपर्वसु ।
विप्रमध्ये वदिष्यन्ति न ते प्राप्स्यन्ति किल्बिषम्॥ ॥१२-२८८-६५॥

य इमां श्रावयेद्विद्वान्कथां पर्वसु पर्वसु
स लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यान्देवर्षिभिरभिष्टुतान्॥ ॥१३-४४-३॥

अपर्वस्वनिषिद्धासु रात्रिष्वप्यनृतौ व्रजेत् ।
रात्रौ च नातिनियमो न वै ह्यनियमो भवेत् ॥'॥ ॥१३-५२-११॥

नारद उवाच ।
बहुभार्यासु सक्तस्य नारीभोगेषु गेहिनः ।
ऋतौ विमुञ्चमानस्य सांनिध्ये भ्रूणहा स्मृतः॥ ॥१३-५९-२॥

व्याधितो बन्धनस्थो वा प्रवासेष्वथ पर्वसु ।
ऋतुकाले तु नारीणां भ्रूणहत्यां प्रमुञ्चति॥ ॥१३-५९-४॥

नासु स्नेहो नरैः कार्यस्तथैवेर्ष्या जनेश्वर ।
खेदमास्थाय भुञ्जीत धर्ममास्थाय चैव ह ।
`अनृताविह पर्वादिदोषवर्जं नराधिप ॥'॥ ॥१३-७८-२९॥

आख्यानं य इदं युक्तः पठेत्पर्वणिपर्वणि ।
न मूर्खं जनयेत्पुत्रं न भवेच्च निराकृतिः॥ ॥१३-१४३-५२॥

न तमापत्स्पृशेत्काचिद्विज्वरो न जरावहः ।
विरजाः श्रेयसा युक्तः प्रेत्य स्वर्गमवाप्नुयात्॥ ॥१३-१४३-५३॥

वर्जयेद्दन्तकाष्ठानि वर्जनीयानि नित्यशः ।
भक्षयेच्छास्त्रदृष्टानि पर्वस्वपि विवर्जयेत् ।
उदङ्मुखश्च सततं शौचं कुर्यात्समाहितः॥ ॥१३-१६१-४६॥

पर्वकालेषु सर्वेषु ब्रह्मचारी सदा भवेत् ।
समानमेकपात्रे तु भुञ्जेन्नान्नं जनेश्वर॥ ॥१३-१६१-९४॥

'तैलं जन्मदिनेऽष्टम्यां चतुर्दश्यां च पर्वसु ।'
नक्षत्रे न च कुर्वीत यस्मिञ्जातो भवेन्नरः ।
न प्रोष्ठपदयोः कार्यं तथाऽऽग्नेये च भारत॥ ॥१३-१६१-१३५॥

यश्चेदं पाण्डवाख्यानं पठेत्पर्वणि पर्वणि ।
स देवलोकं सम्प्राप्य नन्दने स सुखी वसेत्॥ ॥१३-१८५-२५॥

गाव ऊचुः

बहुले समङ्गे ह्यकुतोभये च क्षेमे च सङ्ख्येव हि भूयसी च ।
यथा पुरा ब्रह्मपुरे सवत्सा शतक्रतोर्वज्रधरस्य यज्ञे॥ ॥१३-१८९-३४॥

भूयश्च या विष्णुपदे स्थिताया विभावसोश्चापि पथे स्थिता या ।
देवाश्च सर्वे सह नारदेन प्रकुर्वते सर्वसहेति नाम॥ ॥१३-१८९-३५॥

मन्त्रेणैतेनाभिवन्देत यो वै विमुच्यते पापकृतेन कर्मणा ।
लोकानवाप्नोति पुरन्दरस्य गवां फलं चन्द्रमसो द्युतिं च॥ ॥१३-१८९-३६॥

श्रीरुवाच

प्रकीर्णं भाजनं यत्र भिन्नभाण्डमथासनम् ।
योषितश्चैव हन्यन्ते कश्मलोपहते गृहे॥ ॥१३-१९०-६॥

देवताः पितरश्चैव उत्सवे पर्वणीषु वा ।
निराशाः प्रतिगच्छन्ति कश्मलोपहताद्गृहात्॥ ॥१३-१९०-७॥

इदं च परमं गुह्यं सरहस्यं निबोधत ।
श्राद्धकल्पे च दैवे च तैर्थिके पर्वणीषु च॥ ॥१३-१९०-१२॥

रजस्वला च या नारी श्वित्रिकाऽपुत्रिका च या ।
एताभिश्चक्षुषा दृष्टं हविर्नाश्नन्ति देवताः ।
पितरश्च न तुष्यन्ति वर्षाण्यपि त्रयोदश॥ ॥१३-१९०-१३॥

शुक्लवासाः शुचिर्भूत्वा ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् ।
कीर्तयेद्धारतं चैव तथा स्यादक्षयं हविः॥ ॥१३-१९०-१४॥

विष्णुरुवाच

धर्मगुह्यानि सर्वाणि देवतानां महात्मनाम् ।
ऋषीणां चैव गुह्यानि यः पठेदाह्निकं सदा॥ ॥१३-१९७-८॥

भुञ्जते पितरो देवा हव्यं कव्यमथाक्षयम् ।
श्रावयंश्चापि विप्रेन्द्रान्पर्वसु प्रयतो नरः॥ ॥१३-१९७-१२॥

ऋषीणां देवतानां च पितॄणां चैव नित्यदा ।
भवत्यभिमतः श्रीमान्धर्मेषु प्रयतः सदा॥ ॥१३-१९७-१३॥

न शक्नुयादपि तथा कौमुदीमासमेव च ।
जन्मनक्षत्रतिथिषु सदा पर्वसु रात्रिषु ।
वर्जनीयं तथा मांसं परत्र हितमिच्छता॥ ॥१३-२३३-१४॥

व्रतवद्धारितं चैव ब्रह्मचर्यमकल्मषम् ।
नित्यं संरक्षितं तस्य नैष्ठिकानां विधियते ।
तदिष्यते गृहस्थानां कालमुद्दिश्य कारणम्॥ ॥१३-२३३-४९॥

जन्मनक्षत्रयोगेषु पुण्यवासेषु पर्वसु ।
देवताधर्मकार्येषु ब्रह्मचर्यव्रतं चरेत्॥ ॥१३-२३३-५०॥

ब्रह्मचर्यव्रतफलं लभेद्दारव्रती सदा ।
शौचमायुस्तथाऽऽरोग्यं लभ्यते ब्रह्मचारिभिः॥ ॥१३-२३३-५१॥

य इदं शृणुयाद्विद्वान्पर्वसु द्विजसत्तमः ।
धूतपाप्मा जितस्वर्गो ब्रह्मभूयाय गच्छति॥ ॥१८-५-४०॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

तपसा नियतं देवम् ईशानं सर्वदेहिनाम् ।
ब्रह्मभूतममावास्यां पौर्णमास्यां तथैव च ।
योगभूतं परिचरन् केशवं महदाप्नुयात्॥ ॥६-६२-२०॥

— महाभारते (शास्त्रि-वाविल्ल-संस्करणम्)

श्रुत्वा पर्वास्विदं नित्यं अवाप्स्यन्ति परां गतिम्॥ ॥१५-३७-३४॥

— महाभारते (शास्त्रि-वाविल्ल-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

57 पर्वों पर वृत्रवध आख्यान का श्रवण

भागवत

पंचांग विवरण

हर पर्व (पूर्णिमा, अमावस्या) को इन्द्र द्वारा वृत्र पर विजय की कथा पढ़ें और सुनें।

मूल श्लोक: भा. 6.13.22 · भा. 6.13.23

इदं महाख्यानमशेषपाप्मनां प्रक्षालनं तीर्थपदानुकीर्तनम्।
भक्त्युच्छ्रयं भक्तजनानुवर्णनं महेन्द्रमोक्षं विजयं मरुत्वतः॥ ॥६-१३-२२॥

पठेयुराख्यानमिदं सदा बुधाः शृण्वन्त्यथो पर्वणि पर्वणीन्द्रियम्।
धन्यं यशस्यं निखिलाघमोचनं रिपुञ्जयं स्वस्त्ययनं यथाऽऽयुषम्॥ ॥६-१३-२३॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

58 तिथियों पर ध्रुव चरित कथन

भागवत

पंचांग विवरण

पूर्णिमा, सिनीवाली (अमावस्या) और द्वादशी को ध्रुव का चरित सुनाएँ (श्रवण, दिनक्षय, व्यतीपात, संक्रान्ति और रविवार को भी)।

मूल श्लोक: भा. 4.12.48 · भा. 4.12.49

पौर्णमास्यां सिनीवाल्यां द्वादश्यां श्रवणेऽथ वा।
दिनक्षये व्यतीपाते संक्रमेऽर्कदिनेऽपि वा॥ ॥४-१२-४८॥

श्रावयेच्छ्रद्दधानानां तीर्थपादपदाश्रयः।
नेच्छंस्तत्राऽऽत्मनाऽऽत्मानं सन्तुष्ट इति सिध्यति॥ ॥४-१२-४९॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

59 दर्श-पौर्णमास इष्टि

रामायण, भागवत

पंचांग विवरण

दर्श (अमावस्या) और पौर्णमास (पूर्णिमा) यागों का उल्लेख।

मूल श्लोक: रा. 1.53.24 · भा. 11.18.8

दर्शश्च पौर्णमासश्च यज्ञाश्चैवाप्तदक्षिणाः।
एतदेव हि मे राजन् विविधाश्च क्रियास्तथा॥ ॥१-५३-२४॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

अग्निहोत्रं च दर्शं च पूर्णमासं च पूर्ववत्।
चातुर्मास्यानि च मुनेराम्नातानि च नैगमैः॥ ॥११-१८-८॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

60 माघ पंचदशी श्राद्ध

महाभारत

पंचांग विवरण

माघ मास में पंचदशी (पूर्णिमा या अमावस्या) को श्राद्ध।

मूल श्लोक: म.भा. 14.110.28 · म.भा. 14.110.29

वैशाखमासस्य तु या तृतीयाऽनवद्याऽसौ कार्तिकशुक्लपक्षे ।
नभस्यमासस्य च कृष्णपक्षे त्रयोदशी पञ्चदशी च माघे॥ ॥१४-११०-२८॥

उपप्लवे चन्द्रमसो रवेश्च श्राद्धस्य कालो ह्ययनद्वये च ।
पानीयमप्यत्र तिलैर्विमिश्रं दद्यात्पितृभ्यः प्रयतो मनुष्यः ।
श्राद्धं कृतं तेन समासहस्रं रहस्यमेतत्पितरो वदन्ति॥ ॥१४-११०-२९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

61 ग्रहण के नियम

रामायण, भागवत, महाभारत

पंचांग विवरण

सूर्यग्रहण के समय: कुरुक्षेत्र में स्वर्ण दान (रामायण); स्यमन्तपंचक की यात्रा (भागवत); सन्निहती तीर्थ में स्नान, ग्रहणकाल में दान, श्राद्ध, जप (महाभारत)।

मूल श्लोक: रा. 7.111.14 · भा. 10.70.1 · भा. 10.70.2 · म.भा. 3.81.192 · म.भा. 3.81.194 · म.भा. 3.81.195 · म.भा. 3.81.196 · म.भा. 14.110.27 · म.भा. 14.110.28 · म.भा. 14.110.29 · म.भा. 14.115.19 · म.भा. 14.115.20 · म.भा. 14.115.21 · म.भा. 14.115.53 · म.भा. 14.115.54

गतानि तेन लोकेऽस्मिन् येन रामायणं श्रुतम्।
हेमभारं कुरुक्षेत्रे ग्रस्ते भानौ प्रयच्छति॥ ॥७-१११-१४॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

श्रीशुक उवाच— अथैकदा द्वारवत्यां वसतो रामकृष्णयोः।
सूर्योपरागः सुमहानासीत् कल्पक्षये यथा॥ ॥१०-७०-१॥

तं ज्ञात्वा मनुजा राजन् पुरस्तादेव सर्वशः।
स्यमन्तपञ्चकं क्षेत्रं जग्मुः श्रेयोविधित्सया॥ ॥१०-७०-२॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

सन्निहत्यामुपस्पृश्य राहुग्रस्ते दिवाकरे ।
अश्वमेधशतं तेन तत्रेष्टं शाश्वतं भवेत्॥ ॥३-८१-१९२॥

उदपानानि वाप्यश्च तीर्थान्यायतनानि च ।
निःसंशयममावास्यां समेष्यन्ति नराधिप॥ ॥३-८१-१९४॥

मासिमासि नरव्याघ्र सन्निहत्यां न संशयः ।
तीर्थसन्निहनादेव सन्निहत्येति विश्रुता॥ ॥३-८१-१९५॥

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च स्वर्गलोके महीयते ।
अमावास्यां तु तत्रैव राहुग्रस्ते दिवाकरे॥ ॥३-८१-१९६॥

ग्रहोपरागे विषुवेऽयनान्ते पित्र्ये मघासु स्वसुते च जाते ।
गयेषु पिण्डेषु च पाण्डुपुत्र दत्तं भवेन्निष्कसहस्रतुल्यम्॥ ॥१४-११०-२७॥

वैशाखमासस्य तु या तृतीयाऽनवद्याऽसौ कार्तिकशुक्लपक्षे ।
नभस्यमासस्य च कृष्णपक्षे त्रयोदशी पञ्चदशी च माघे॥ ॥१४-११०-२८॥

उपप्लवे चन्द्रमसो रवेश्च श्राद्धस्य कालो ह्ययनद्वये च ।
पानीयमप्यत्र तिलैर्विमिश्रं दद्यात्पितृभ्यः प्रयतो मनुष्यः ।
श्राद्धं कृतं तेन समासहस्रं रहस्यमेतत्पितरो वदन्ति॥ ॥१४-११०-२९॥

चन्द्रसूर्यग्रहे व्योम्नि मम वा शङ्करस्य वा ।
गायत्रीं मामिकां वाऽपि जपेद्यः शङ्करस्य वा॥ ॥१४-११५-१९॥

शङ्खतूर्यस्वनैश्चैव कांस्यघण्टास्वनैरपि ।
कारयेत्तु ध्वनिं भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११५-२०॥

गान्धर्वैर्होमजप्यैश्च जप्तैरुत्कृष्टनामभिः ।
दुर्बलोपि भवेद्राहुः सोमश्च बलवान्भवेत्॥ ॥१४-११५-२१॥

दक्षिणावर्तशङ्खाद्वा कपिलाशृङ्गतोपि वा ।
प्राक्स्रोतसं नदीं गत्वा ममायतनसन्निधौ॥ ॥१४-११५-५३॥

सलिलेन तु यः स्नायात्सकृदेव रविग्रहे ।
तस्य यत्सञ्चितं पापं तत्क्षणादेव नश्यति॥ ॥१४-११५-५४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

62 उत्तरायण पुण्यकाल

महाभारत

पंचांग विवरण

उत्तरायण के आरम्भ में श्राद्ध; अयनों पर दान (कपिला गाय, श्रोत्रियों को दान), विष्णु गायत्री जप।

मूल श्लोक: म.भा. 14.110.28 · म.भा. 14.110.29 · म.भा. 3.203.125 · म.भा. 3.203.126 · म.भा. 14.105.69 · म.भा. 14.110.27 · म.भा. 14.115.3 · म.भा. 14.115.27 · म.भा. 14.115.28 · म.भा. 14.115.29

वैशाखमासस्य तु या तृतीयाऽनवद्याऽसौ कार्तिकशुक्लपक्षे ।
नभस्यमासस्य च कृष्णपक्षे त्रयोदशी पञ्चदशी च माघे॥ ॥१४-११०-२८॥

उपप्लवे चन्द्रमसो रवेश्च श्राद्धस्य कालो ह्ययनद्वये च ।
पानीयमप्यत्र तिलैर्विमिश्रं दद्यात्पितृभ्यः प्रयतो मनुष्यः ।
श्राद्धं कृतं तेन समासहस्रं रहस्यमेतत्पितरो वदन्ति॥ ॥१४-११०-२९॥

अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखेषु च ।
चन्द्रसूर्योपरागे च दत्तमक्षयमुच्यते॥ ॥३-२०३-१२५॥

ऋतुषु दशगुणं वदन्ति दत्तं शतगुणमृत्वयनादिषु ध्रुवम् ।
भवति सहस्रगुणं दिनस्य राहोर्विषुवति चाक्षयमश्नुते फलम्॥ ॥३-२०३-१२६॥

सुवर्णखुरशृङ्गीं च कपिलां यः प्रयच्छति ।
विषुवे चायने चापि सोऽश्वमेधफलं लभेत् ।
तेनाश्वमेधतुल्येन मम लोकं स गच्छति॥ ॥१४-१०५-६९॥

ग्रहोपरागे विषुवेऽयनान्ते पित्र्ये मघासु स्वसुते च जाते ।
गयेषु पिण्डेषु च पाण्डुपुत्र दत्तं भवेन्निष्कसहस्रतुल्यम्॥ ॥१४-११०-२७॥

भगवानुवाच ।
शृणुष्व राजन्विषुवे सोमार्कग्रहणेषु च ।
व्यतीपातेऽयने चैव दानं स्यादक्षयं फलम्॥ ॥१४-११५-३॥

युधिष्ठिर उवाच ।
भगवंस्तव गायत्री जप्यते च कथं विभो ।
किं वा तस्य फलं देव ममाचक्ष्व सुरेश्वर॥ ॥१४-११५-२७॥

भगवानुवाच ।
द्वादश्यां विषुवे चैव चन्द्रसूर्यग्रहे तथा ।
अयने श्रवणे चैव व्यतीपाते तथैव च॥ ॥१४-११५-२८॥

अश्वत्तदर्शने चैव तथा मद्दर्शनेऽपि च ।
जप्या तु मम गायत्री चाथवाऽष्टाक्षरं नृप ।
आर्जितं दुष्कृतं तस्य नाशयेन्नात्र संशयः॥ ॥१४-११५-२९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

63 दक्षिणायन पुण्यकाल

महाभारत

पंचांग विवरण

किसी भी अयन (उत्तरायण, दक्षिणायन के आरम्भ) पर दान, पितृ तर्पण, विष्णु गायत्री जप।

मूल श्लोक: म.भा. 3.203.125 · म.भा. 3.203.126 · म.भा. 14.105.69 · म.भा. 14.110.27 · म.भा. 14.115.3 · म.भा. 14.115.27 · म.भा. 14.115.28 · म.भा. 14.115.29

अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखेषु च ।
चन्द्रसूर्योपरागे च दत्तमक्षयमुच्यते॥ ॥३-२०३-१२५॥

ऋतुषु दशगुणं वदन्ति दत्तं शतगुणमृत्वयनादिषु ध्रुवम् ।
भवति सहस्रगुणं दिनस्य राहोर्विषुवति चाक्षयमश्नुते फलम्॥ ॥३-२०३-१२६॥

सुवर्णखुरशृङ्गीं च कपिलां यः प्रयच्छति ।
विषुवे चायने चापि सोऽश्वमेधफलं लभेत् ।
तेनाश्वमेधतुल्येन मम लोकं स गच्छति॥ ॥१४-१०५-६९॥

ग्रहोपरागे विषुवेऽयनान्ते पित्र्ये मघासु स्वसुते च जाते ।
गयेषु पिण्डेषु च पाण्डुपुत्र दत्तं भवेन्निष्कसहस्रतुल्यम्॥ ॥१४-११०-२७॥

भगवानुवाच ।
शृणुष्व राजन्विषुवे सोमार्कग्रहणेषु च ।
व्यतीपातेऽयने चैव दानं स्यादक्षयं फलम्॥ ॥१४-११५-३॥

युधिष्ठिर उवाच ।
भगवंस्तव गायत्री जप्यते च कथं विभो ।
किं वा तस्य फलं देव ममाचक्ष्व सुरेश्वर॥ ॥१४-११५-२७॥

भगवानुवाच ।
द्वादश्यां विषुवे चैव चन्द्रसूर्यग्रहे तथा ।
अयने श्रवणे चैव व्यतीपाते तथैव च॥ ॥१४-११५-२८॥

अश्वत्तदर्शने चैव तथा मद्दर्शनेऽपि च ।
जप्या तु मम गायत्री चाथवाऽष्टाक्षरं नृप ।
आर्जितं दुष्कृतं तस्य नाशयेन्नात्र संशयः॥ ॥१४-११५-२९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

64 विषुव के कृत्य

महाभारत

पंचांग विवरण

विषुव (विषुवत् संक्रान्ति) के दिन: दिन-रात उपवास, इन्द्रियसंयम, ध्यान; सौम्य मुहूर्त में कपिला पंचगव्य से विष्णु/शंकर प्रतिमा का अभिषेक; तिलधेनु, स्वर्ण सींगों वाली कपिला गाय, दही-मधु का दान; विष्णु गायत्री / अष्टाक्षर जप। (ये किसी एक तिथि से बँधे नहीं हैं — वह अवसर आने पर पालन करें।)

मूल श्लोक: म.भा. 3.203.123 · म.भा. 14.102.67 · म.भा. 14.102.68 · म.भा. 14.102.69 · म.भा. 14.105.69 · म.भा. 14.106.25 · म.भा. 14.106.26 · म.भा. 14.106.27 · म.भा. 14.115.11 · म.भा. 14.115.12 · म.भा. 14.115.13 · म.भा. 14.115.7 · म.भा. 14.115.8 · म.भा. 14.115.9 · म.भा. 14.115.14 · म.भा. 14.115.15 · म.भा. 14.115.16 · म.भा. 14.115.27 · म.भा. 14.115.28 · म.भा. 14.115.29

प्रतिस्रोतश्चित्रवाहाः पर्जन्योऽन्नानुसञ्चरन् ।
महाधुरि यथा नावा महापापैः प्रमुच्यते ।
विषुवे विप्रदत्तानि दधिमध्वक्षयाणि च॥ ॥३-२०३-१२३॥

अष्टाढकतिलैः कृत्वा तिलधेनुं नराधिप ।
द्वात्रिंशन्निष्कसंयुक्तं विषुवे यः प्रयच्छति ।
मद्भक्त्या मद्गतात्मा वै तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-१०२-६७॥

कन्यादानसहस्रस्य विधिदत्तस्य यत्फलम् ।
तत्पुण्यं समनुप्राप्तो मम लोके महीयते॥ ॥१४-१०२-६८॥

मम लोकावतीर्णश्च सोस्मिँल्लोकेऽभिजायते ।
ऋग्यजुस्सामवेदानां पारगो ब्राह्मणर्षभः॥ ॥१४-१०२-६९॥

सुवर्णखुरशृङ्गीं च कपिलां यः प्रयच्छति ।
विषुवे चायने चापि सोऽश्वमेधफलं लभेत् ।
तेनाश्वमेधतुल्येन मम लोकं स गच्छति॥ ॥१४-१०५-६९॥

उपवासं तु यः कृत्वाऽप्यहोरात्रं जितेन्द्रियः ।
कपिलापञ्चगव्यं तु पीत्वा चान्द्रायणात्परम्॥ ॥१४-१०६-२५॥

सौम्ये मुहूर्ते तत्प्रशय शुद्धात्मा शुद्धमानसः ।
क्रोधानृतविनिर्मुक्तो मद्गतेनान्तरात्मना॥ ॥१४-१०६-२६॥

कपिलापञ्चगव्येन सुमन्त्रेण पृथक्पथक् ।
यो मत्प्रतिकृतिं वाऽपि शङ्कराकृतिमेव वा ।
स्नापयेद्विषुवे यस्तु सोऽश्वमेधफलं लभेत्॥ ॥१४-१०६-२७॥

अन्नं गावस्तिलान्भूमिं कन्यादानं तथैव च ।MM-KK-14-03-115-011c गृहमायतनं धान्यं वाहनं शयनं तथा॥ ॥१४-११५-११॥

यच्चान्यच्च मया प्रोक्तं तत्प्रयच्छ युधिष्ठिर ।
दीयते विषुवेष्वेवं श्रोत्रियेभ्यो विशेषतः॥ ॥१४-११५-१२॥

तस्य दानस्य कौन्तेय क्षयं नैवोपपद्यते ।
वर्धतेऽहरहः पुण्यं तद्दानं कोटिसम्मितम्॥ ॥१४-११५-१३॥

तदेवाद्यक्षरं ब्रह्म परं ब्रह्मेति कीर्तितम् ।
तस्मिन्मुहूर्ते सर्वे तु चिन्तयन्ति परं पदम्॥ ॥१४-११५-७॥

देवाश्च वसवो रुद्राः पितरश्चाश्विनौ तथा ।
साध्याश्च विश्वे गन्धर्वाः सिद्धा ब्रह्मर्षयस्तथा॥ ॥१४-११५-८॥

सोमादयो ग्रहाश्चैव सरितः सागरास्तथा ।
मरुतोप्सरसो नागा यक्षराक्षसगुह्यकाः॥ ॥१४-११५-९॥

विषुवे स्नपनं यस्तु मम कुर्याद्धरस्य वा ।
अर्चनां च यतान्यायं तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११५-१४॥

दशजन्मकृतं पापं तस्य सद्यो विनश्यति ।
दशानामश्वमेधानामिष्टानां लभते फलम्॥ ॥१४-११५-१५॥

विमानं दिव्यमारूढः कामरूपी यथासुखम् ।
स याति मामकं लोकं रुद्रलोकमथापि वा॥ ॥१४-११५-१६॥

युधिष्ठिर उवाच ।
भगवंस्तव गायत्री जप्यते च कथं विभो ।
किं वा तस्य फलं देव ममाचक्ष्व सुरेश्वर॥ ॥१४-११५-२७॥

भगवानुवाच ।
द्वादश्यां विषुवे चैव चन्द्रसूर्यग्रहे तथा ।
अयने श्रवणे चैव व्यतीपाते तथैव च॥ ॥१४-११५-२८॥

अश्वत्तदर्शने चैव तथा मद्दर्शनेऽपि च ।
जप्या तु मम गायत्री चाथवाऽष्टाक्षरं नृप ।
आर्जितं दुष्कृतं तस्य नाशयेन्नात्र संशयः॥ ॥१४-११५-२९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

65 व्यतीपात के कृत्य

महाभारत

पंचांग विवरण

व्यतीपात योग के दिन दान; विष्णु गायत्री या अष्टाक्षर जप। (ये किसी एक तिथि से बँधे नहीं हैं — वह अवसर आने पर पालन करें।)

मूल श्लोक: म.भा. 14.115.3 · म.भा. 14.115.27 · म.भा. 14.115.28 · म.भा. 14.115.29

भगवानुवाच ।
शृणुष्व राजन्विषुवे सोमार्कग्रहणेषु च ।
व्यतीपातेऽयने चैव दानं स्यादक्षयं फलम्॥ ॥१४-११५-३॥

युधिष्ठिर उवाच ।
भगवंस्तव गायत्री जप्यते च कथं विभो ।
किं वा तस्य फलं देव ममाचक्ष्व सुरेश्वर॥ ॥१४-११५-२७॥

भगवानुवाच ।
द्वादश्यां विषुवे चैव चन्द्रसूर्यग्रहे तथा ।
अयने श्रवणे चैव व्यतीपाते तथैव च॥ ॥१४-११५-२८॥

अश्वत्तदर्शने चैव तथा मद्दर्शनेऽपि च ।
जप्या तु मम गायत्री चाथवाऽष्टाक्षरं नृप ।
आर्जितं दुष्कृतं तस्य नाशयेन्नात्र संशयः॥ ॥१४-११५-२९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

66 श्रेयःकाल (भागवत सप्तम स्कन्ध)

भागवत

पंचांग विवरण

स्नान, जप, होम, व्रत, देव-पितृ पूजा और दान के लिए श्रेष्ठ काल: अयन, विषुव, कुहू (अमावस्या), व्यतीपात, दिनक्षय, सूर्य-चन्द्र ग्रहण, द्वादशी, श्रवण, शुक्ल तृतीया, कार्तिक शुक्ल नवमी, चार अष्टकाएँ, हेमन्त-शिशिर, माघ शुक्ल सप्तमी, मघा नक्षत्रयुक्त दिन आदि। (ये किसी एक तिथि से बँधे नहीं हैं — वह अवसर आने पर पालन करें।)

मूल श्लोक: भा. 7.14.20 · भा. 7.14.21 · भा. 7.14.22 · भा. 7.14.23 · भा. 7.14.24

कुर्यादपरपक्षीयं मासि प्रोष्ठपदे द्विजः।
श्राद्धं पित्रोर्यथावित्तं तद्बन्धूनां च वित्तवान्॥ ॥७-१४-२०॥

अयने विषुवे कुह्वां व्यतीपाते दिनक्षये।
चन्द्रादित्योपरागे च द्वादश्यां श्रवणेषु च॥ ॥७-१४-२१॥

तृतीयायां शुक्लपक्षे नवम्यामथ कार्तिके।
चतसृष्वप्यष्टकासु हेमन्ते शिशिरे तथा॥ ॥७-१४-२२॥

माघे च सितसप्तम्यां मघाराकासमागमे।
राकया वाऽनुमत्या वा मासर्क्षाणि युतान्यपि॥ ॥७-१४-२३॥

द्वादश्यामनुराधा स्यात् श्रवणस्तिस्र उत्तराः।
तिसृष्वेकादशी चासु जन्मर्क्षं सौम्ययोगयुक्॥ ॥७-१४-२४॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

व्रत (आरम्भ – समापन)

67 पुंसवन व्रत का आरम्भ

भागवत

पंचांग विवरण

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष का आरम्भ (प्रतिपदा मानी गई) — पति की अनुमति से पत्नी द्वारा किया जाने वाला बारह मास का व्रत।

मूल श्लोक: भा. 6.19.2 · भा. 6.19.3

श्रीशुक उवाच— शुक्ले मार्गशिरे पक्षे योषिद् भर्तुरनुज्ञया।
आरभेत व्रतमिदं सार्वकामिकमादितः॥ ॥६-१९-२॥

निशम्य मरुतां जन्म ब्राह्मणाननुमन्त्र्य च।
स्नात्वा शुक्लदती शुक्ले वसीतालङ्कृताम्बरे॥ ॥६-१९-३॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

68 पुंसवन व्रत का समापन

भागवत

पंचांग विवरण

कार्तिक मास का अन्तिम दिन (अमावस्या, अमान्त) — अगली सुबह समापन होम।

मूल श्लोक: भा. 6.19.21 · भा. 6.19.22

एतेन पूजाविधिना मासान् द्वादश हायनम्।
नीत्वा चोपरमेत् साध्वी कार्तिके चरमेऽहनि॥ ॥६-१९-२१॥

श्वो भूतेऽप उपस्पृश्य कृष्णमभ्यर्च्य पूर्ववत्। पयःश्रृतेन जुहुयाच्चरुणा सह सर्पिषा।
पाकयज्ञविधानेन द्वादशैवाहुतीः पतिः॥ ॥६-१९-२२॥

— श्रीमद्भागवते महापुराणे

↑ विषय-सूची पर वापस

69 नक्षत्राङ्ग (रूप-सौभाग्य) व्रत का आरम्भ

महाभारत

पंचांग विवरण

मार्गशीर्ष मास में जिस दिन चन्द्रमा मूल नक्षत्र में हो, उस दिन आरम्भ; इसके बाद प्रत्येक नक्षत्र पर एक-एक अंग की पूजा का व्रत। श्लोक अतिरिक्त अंश में हैं।

मूल श्लोक: म.भा. 13.172.2 · म.भा. 13.172.3 · म.भा. 13.172.4 · म.भा. 13.172.5

अङ्गानां रूपसौभाग्यं प्रियं चैव कथं भवेत् ।
धर्मार्थकामसंयुक्तः सुखभागी कथं भवेत्॥ ॥१३-१७२-२॥

भीष्म उवाच
मार्गशीर्षस्य मासस्य चन्द्रे मूलेन संयुते ।
पादौ मूलेन राजेन्द्र जङ्घायामथ रोहिणीम्॥ ॥१३-१७२-३॥

अश्विन्यां सक्थिनी चैव ऊरू चाषाढयोस्तथा ।
गुह्यं तु फाल्गुनी विद्यात्कृत्तिका कटिकास्तथा॥ ॥१३-१७२-४॥

नाभिं भाद्रपदे विद्याद्रेवत्यामक्षिमण्डलम् ।
पृष्ठमेव धनिष्ठासु अनुराधोत्तरास्तथा॥ ॥१३-१७२-५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

70 चान्द्रायण व्रत का आरम्भ

महाभारत

पंचांग विवरण

शुक्ल प्रतिपदा से एक चान्द्र मास तक चान्द्रायण व्रत (चन्द्रकलाओं के साथ ग्रासों का बढ़ना-घटना)।

मूल श्लोक: म.भा. 14.112.3 · म.भा. 14.112.4 · म.भा. 14.112.5 · म.भा. 14.112.6

ब्राह्मणः क्षत्रियो वाऽपि वैश्यो वा चरितव्रतः ।
यथावत्कर्तुकामो वै तस्यैवं प्रथमा क्रिया॥ ॥१४-११२-३॥

शोधयेत्तु शरीरं स्वं पञ्चगव्येन यन्त्रितः ।
सशिरः कृष्णपक्षस्य ततः कुर्वीत वापनम्॥ ॥१४-११२-४॥

शुक्लवासाः शुचिर्भूत्वा मौञ्जीं बध्नीत मेखलाम् ।
पालाशदण्डमादाय ब्रह्मचारिव्रते स्थितः॥ ॥१४-११२-५॥

कृतोपवासः पूर्वं तु शुक्लप्रतिपदि द्विजः ।MM-KK-14-03-112-006c नदीसङ्गमतीर्थेषु शुचौ देशे गृहेऽपि वा ।
गोमयेनोपलिप्तेऽथ स्थण्डिलेऽग्निं निधापयन्॥ ॥१४-११२-६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

71 नागबलि (कार्तिक कृष्ण अष्टमी, आश्लेषा)

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक कृष्ण अष्टमी, आश्लेषा नक्षत्र, सूर्यास्त के बाद (प्रदोष): बाँबी के पास गुड़-भात से नागों को बलि। श्लोक अतिरिक्त अंश में हैं।

मूल श्लोक: म.भा. 13.195.7 · म.भा. 13.195.8 · म.भा. 13.195.9 · म.भा. 13.195.11

दिग्गजा ऊचुः
कार्तिके मासि चाश्लेषा बहुलस्याष्टमी शिवा ।
तेन नक्षत्रयोगेन यो ददाति गुडौदनम् ।
इमं मन्त्रं जपञ्छ्राद्धे यताहारो ह्यकोपनः॥ ॥१३-१९५-७॥

बलदेवप्रभृतयो ये नागा बलवत्तराः ।
अनन्ता ह्यक्षया नित्यं भोगिनः सुमहाबलाः॥ ॥१३-१९५-८॥

तेषां कुलोद्भवा ये च महाभूता भुजङ्गमाः ।
ते मे बलिं प्रयच्छन्तु बलतेजोभिवृद्धये॥ ॥१३-१९५-९॥

एवमुक्त्वा बलिं तत्र वल्मीके तु निवेदयेत्॥ ॥१३-१९५-११॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

मास के नियम

72 चैत्र मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

चैत्र मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113। चैत्र मास में मानस द्वार के सरोवर पर सत्रों से पिनाकी (शिव) की आराधना; वहाँ श्रद्धा से स्नान करने वाला पापरहित होता है (3.132.15-16)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.22 · म.भा. 14.113.26 · म.भा. 14.113.27 · म.भा. 14.113.28 · म.भा. 3.132.15 · म.भा. 3.132.16

चैत्रं तु नियतो मासमेकभक्तेन यः क्षिपेत् ।
सुवर्णमणिमुक्ताढ्ये कुले महति जायते॥ ॥१३-१६३-२२॥

चैत्रमासं तु यो राजन्नेकभुक्तेन वर्तते ।
ब्रह्मचारी च मद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-२६॥

यदग्निहोत्रिणः पुण्यं यथोक्तं व्रतचारिणः ।
तत्पुण्यफकलमासाद्य चन्द्रलोके महीयते॥ ॥१४-११३-२७॥

ततोऽवतीर्णो जायेत वर्षे रमणके पुनः ।
भुक्त्वा कामांस्ततस्तस्मिन्निह राजा भविष्यति॥ ॥१४-११३-२८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

अस्मिन्सरसि सत्रैर्वै चैत्रे मासि पिनाकिनम् ।
यजन्ते याजकाः सम्यक् परिवारं शुभार्थिनः॥ ॥३-१३२-१५॥

अत्रोपस्पृश्य सरसि श्रद्दधानो जितेन्द्रियः ।
क्षीणपापः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुते नात्र संशयः॥ ॥३-१३२-१६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

73 वैशाख मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

वैशाख मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.23 · म.भा. 14.113.29 · म.भा. 14.113.30 · म.भा. 14.113.31 · म.भा. 14.113.32

निस्तरेदेकभक्तेन वैशाखं यो जितेन्द्रियः ।
नरो वा यदि वा नारी ज्ञातीनां श्रेष्ठतां व्रजेत्॥ ॥१३-१६३-२३॥

वैशाखे यस्तु मासे वै ह्येकभुक्तेन वर्तते ।
द्विजमग्रासने कृत्वा भुञ्जन्भूमौ च वाग्यतः॥ ॥१४-११३-२९॥

नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्यर्चयित्वा दिवाकरम् ।
व्रतान्ते भोजयेद्विप्रांस्तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-३०॥

फलं यद्विधिवत्प्रोक्तमग्निष्टोमातिरात्रयोः ।
तत्पुण्यफलमासाद्य देवलोके महीयते॥ ॥१४-११३-३१॥

ततो हैमवते वर्षे जायते कालपर्ययात् ।
तत्र प्रकामं क्रीडित्वा विप्रः पश्चाद्भविष्यति॥ ॥१४-११३-३२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

74 ज्येष्ठ मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

ज्येष्ठ मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.24 · म.भा. 14.113.33 · म.भा. 14.113.34 · म.भा. 14.113.35 · म.भा. 14.113.36

ज्येष्ठामूलं तु यो मासमेकभक्तेन सङ्क्षिपेत् ।
ऐश्वर्यमतुलं श्रेष्ठं पुमान्स्त्री वा प्रपद्यते॥ ॥१३-१६३-२४॥

ज्येष्ठमासं तु यो विप्रो ह्येकभुक्तेन वर्तते ।
विप्रमग्रासने कृत्वा भूमौ भुञ्जन्यथाविधि॥ ॥१४-११३-३३॥

नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्युच्चरन्मां समाहितः ।
डम्भानृतविनिर्मुक्तस्तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-३४॥

चीर्णे चान्द्रायणे सम्यग्यत्पुण्यं समुदाहृतम् ।
तत्पुण्यफलमासाद्य देवलोके महीयते॥ ॥१४-११३-३५॥

अथोत्तरकुरौ वर्षे जायते निर्गतस्ततः ।
ततश्चापि च्युतः कालादिह लोके द्विजो भवेत्॥ ॥१४-११३-३६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

75 आषाढ़ मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

आषाढ़ मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.25 · म.भा. 14.113.37 · म.भा. 14.113.38 · म.भा. 14.113.39 · म.भा. 14.113.40

आषाढमेकभक्तेन स्थित्वा मासमतन्द्रितः ।
बहुधान्यो बहुधनो बहुपुत्रश्च जायते॥ ॥१३-१६३-२५॥

आषाढमासं यो राजन्नेकभुक्तेन वर्तते ।
ब्रह्मचारी जितक्रोधो मदर्चनपरायणः॥ ॥१४-११३-३७॥

विप्रमग्रासने कृत्वा भूमौ भुञ्जञ्जितेन्द्रियः ।
कृत्वा त्रिषवणं स्नानमष्टाक्षरविधानतः॥ ॥१४-११३-३८॥

व्रतान्ते भोजयेद्विद्वान्पायसेन युधिष्ठिर ।
गुडोदनेन राजेन्द्र तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-३९॥

कपिलाशतदानस्य यत्पुण्यं पाण्डुनन्दन ।
तत्पुण्यफलमासाद्य देवलोके महीयते॥ ॥१४-११३-४०॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

76 श्रावण मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

श्रावण मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.26 · म.भा. 14.113.42 · म.भा. 14.113.43 · म.भा. 14.113.44 · म.भा. 14.113.45

श्रावणं नियतो मासमेकभक्तेन यः क्षिपेत् ।
रूपद्रविणसम्पन्नः सुखी भवति नित्यशः ।
बहुभार्यो बहुधनो बहुपुत्रश्च जायते॥ ॥१३-१६३-२६॥

श्रावणं यः क्षिपेन्मासमेकभुक्तेन वर्तते ।
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्युक्त्वा मामर्चयेत्सदा ।
विप्रमाग्रासने कृत्वा भूमौ भुञ्जन्यथाविधि॥ ॥१४-११३-४२॥

पायसेनार्चयन्विप्राञ्जितक्रोधो जितेन्द्रियः ।
लोभमोहविनिर्मुक्तस्तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-४३॥

कपिलादानस्य यत्पुण्यं विधिदत्तस्य पाण्डव ।
तत्पुण्यं समनुप्राप्य शक्रलोके महीयते॥ ॥१४-११३-४४॥

ततश्चापि च्युत कालात्कुशद्वीपे प्रजायते ।
तत्र प्रकामं क्रीडित्वा विप्रो भवति मानुषे॥ ॥१४-११३-४५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

77 भाद्रपद मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

भाद्रपद मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113। भाद्रपद में श्राद्ध प्रशस्त (13.238.7)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.27 · म.भा. 13.238.7 · म.भा. 14.113.46 · म.भा. 14.113.47 · म.भा. 14.113.48 · म.भा. 14.113.49

प्रौष्ठपादं तु यो मासमेकाहारो भवेन्नरः ।
गवाढ्यं स्फीतमचलमैश्वर्यं प्रतिपद्यते॥ ॥१३-१६३-२७॥

माघप्रोष्ठपदौ मासौ श्राद्धकर्मणि पूजितौ ।
पक्षयोः कृष्णपक्षश्च पूर्वपक्षात्प्रशस्यते॥ ॥१३-२३८-७॥

यस्तु भाद्रपदं मासमेकभुक्तेन वर्तते ।
ब्रह्मचारी जितक्रोधः सत्यसन्धो जितेन्द्रियः॥ ॥१४-११३-४६॥

विप्रमग्रासने कृत्वा पाकभेदविवर्जितः ।
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्युक्त्वाऽस्य चरणौ स्पृशेत्॥ ॥१४-११३-४७॥

तिलानपि घृतं वाऽपि व्रतान्ते दक्षिणां ददत् ।
मद्भक्तस्य नरश्रेष्ठ तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-४८॥

यत्फलं विधिवत्प्रोक्तं राजसूयाश्वमेधयोः ।
तत्पुण्यफलमासाद्य शक्रलोके महीयते॥ ॥१४-११३-४९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

78 आश्विन मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

आश्विन मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113। आश्विन में ब्राह्मणों को घी का दान (13.100.10)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.100.10 · म.भा. 13.163.28 · म.भा. 14.113.51 · म.भा. 14.113.52 · म.भा. 14.113.53 · म.भा. 14.113.54

घृतं मासे आश्वयुजि विप्रभ्यो यः प्रयच्छति ।
तस्मै प्रयच्छतो रूपं प्रीतौ देवाविहाश्विनौ॥ ॥१३-१००-१०॥

तथैवाश्वयुजं मासमेकभक्तेन यः क्षिपेत् ।
प्रज्ञावान्वाहनाढ्यश्च बहुपुत्रश्च जायते॥ ॥१३-१६३-२८॥

यश्चाप्याश्वयुजं मासमेकभुक्तेन वर्तते ।
मद्गायत्रीं जपेद्भक्त्या मद्गतेनान्तरात्मना ।
द्विसन्ध्यं वा त्रिसन्ध्यं वा शतमष्टोत्तरं तु वा॥ ॥१४-११३-५१॥

विप्रमग्रासने कृत्वा संयतेन्द्रियमानसः ।
व्रतान्ते भोजयेद्विप्रांस्तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-५२॥

अश्वमेधस्य यत्पुण्यं विधिवत्पाण्डुनन्दन ।
तत्पुण्यफलमासाद्य मम लोके महीयते॥ ॥१४-११३-५३॥

ततश्चापि च्युतः कालाच्छ्वेतद्वीपे प्रजायते ।
तत्र भुक्त्वा च भोगांश्च ततो विप्रवरो भवेत्॥ ॥१४-११३-५४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

79 कार्तिक मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

कार्तिक मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113। कौमुद (कार्तिक) मास में मांस का त्याग (13.233.14)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.29 · म.भा. 13.233.14 · म.भा. 14.113.4 · म.भा. 14.113.5 · म.भा. 14.113.6 · म.भा. 14.113.7

कार्तिकं तु नरो मासं यः कुर्यदेकभोजनम् ।
शूरश्च बहुभार्यश्च कीर्तिमांश्चैव जायते॥ ॥१३-१६३-२९॥

न शक्नुयादपि तथा कौमुदीमासमेव च ।
जन्मनक्षत्रतिथिषु सदा पर्वसु रात्रिषु ।
वर्जनीयं तथा मांसं परत्र हितमिच्छता॥ ॥१३-२३३-१४॥

कार्तिकाद्यास्तु ये मासा द्वादशैव प्रकीर्तिताः ।
तेष्वेकबुक्तनियमः सर्वेषामुच्यते मया॥ ॥१४-११३-४॥

कार्तिके यस्तु वै मासे नन्दायां संयतेन्द्रियः ।
एकभुक्तेन मद्भक्तो मासमेकं तु वर्तते॥ ॥१४-११३-५॥

जलं वा न पिबेन्मासे नान्तरं भोजनात्परम् ।
आदित्यरूपं मां नित्यमर्चयन्सुसमाहितः॥ ॥१४-११३-६॥

व्रतान्ते भोजयेद्विप्रान्दक्षिणां सम्प्रदाय च ।
क्रोधलोभविनिर्मुक्तस्तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

80 मार्गशीर्ष मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

मार्गशीर्ष मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.17 · म.भा. 13.163.18 · म.भा. 14.113.9 · म.भा. 14.113.10 · म.भा. 14.113.11 · म.भा. 14.113.12

मार्गशीर्षं तु वै मासमेकभक्तेन यः क्षिपेत् ।
भोजयेच्च द्विजाञ्शक्त्या स मुच्येद्व्याधिकिल्बिषैः॥ ॥१३-१६३-१७॥

सर्वकल्याणसम्पूर्णः सर्वौषधिसमन्वितः ।
कृषिभागी बहुधनो बहुधान्यश्च जायते॥ ॥१३-१६३-१८॥

मार्गशीर्षं तु यो मासमेकभुक्तेन वर्तते ।
कामं क्रोधं च लोभं च परित्यज्य यथाविधि॥ ॥१४-११३-९॥

स्नात्वा चादित्यरूपं मामर्चयेन्नियतेन्द्रियः ।
जपेच्चैव च गायत्रीं मामिकां वाग्यतेन्द्रियः॥ ॥१४-११३-१०॥

मासे परिसमाप्ते तु भोजयित्वा द्विजाञ्शुचिः ।
तानर्चयति मद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-११॥

अग्निहोत्रे कृते पुण्यमाहिताग्नेस्तु यद्भवेत् ।
तत्पुण्यं फलमासाद्य योनेनांऽबरशोभिना ।
सह सप्तर्षिलोकेषु यथाकामं यथासुखम्॥ ॥१४-११३-१२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

81 पौष मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

पौष मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113। पौष से चार मास तक सार्वजनिक अग्नि जलाए रखें, फिर ब्राह्मणों को पायस (14.103.52–55)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.19 · म.भा. 14.103.52 · म.भा. 14.103.53 · म.भा. 14.103.54 · म.भा. 14.103.55 · म.भा. 14.113.14 · म.भा. 14.113.15 · म.भा. 14.113.16 · म.भा. 14.113.17

पौषमासं तु कौन्तेय भक्तेनैकेन यः क्षिपेत् ।
सुभगो दर्शनीयश्च यशोभागी च जायते॥ ॥१३-१६३-१९॥

चत्वरे वा सभायां वा विस्तीर्णे वा सभाङ्गणे ।
कृत्वाऽग्निकुण्डं विपुलं स्थण्डिलं वा युधिष्ठिर॥ ॥१४-१०३-५२॥

तत्राग्निं चतुरो मासाञ्ज्वालयेद्यस्तु भक्तिमाम् ।
समाप्तेषु च मासेषु पौष्यादिषु ततो द्विजान्॥ ॥१४-१०३-५३॥

भोजयेत्पायसं मृष्टं मद्गतेनान्तरात्मना ।
दक्षिणां च यथाशक्ति ब्राह्मणेभ्यो निवेदयत्॥ ॥१४-१०३-५४॥

एवमग्निं तु यः कुर्यान्नित्यमेवार्चयेत्तु माम् ।
तस्य पुण्यफलं यद्वै तन्निबोध युधिष्ठिर॥ ॥१४-१०३-५५॥

पौषमासं क्षिपेदेवमेकभुक्तेन यो नरः ।
अर्चयन्नेव मां नित्यं मद्गतेनान्तरात्मना॥ ॥१४-११३-१४॥

अहिंसासत्यसहितः क्रोधहर्षविवर्जितः ।
एवं युक्तस्य राजेन्द्र शृणु यत्फलमुत्तमम्॥ ॥१४-११३-१५॥

विप्रातिथ्यसहस्रेषु यत्पुण्यं समुदाहृतम् ।
तत्पुण्यं समनुप्राप्य शक्रलोके महीयते॥ ॥१४-११३-१६॥

अवतीर्णस्ततः कालादिलावर्षेषु जायते ।
तत्र स्थित्वा चिरं कालमस्मिन्विप्रो भविष्यति॥ ॥१४-११३-१७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

82 माघ मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

माघ मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113। माघ में ब्राह्मणों को तिल का दान (13.101.8); श्राद्ध प्रशस्त (13.238.7)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.101.8 · म.भा. 13.163.20 · म.भा. 13.238.7 · म.भा. 14.113.18 · म.भा. 14.113.19 · म.भा. 14.113.20 · म.भा. 14.113.21

माघमासे तिलान्यस्तु ब्राह्मणेभ्यः प्रयच्छति ।
सर्वसत्वसमाकीर्णं नरकं स न पश्यति॥ ॥१३-१०१-८॥

पितृभक्तो माघमासं यः क्षिपेदेकभोजनः ।
श्रीमत्कुले ज्ञातिमध्ये सुभगत्वं प्रपद्यते॥ ॥१३-१६३-२०॥

माघप्रोष्ठपदौ मासौ श्राद्धकर्मणि पूजितौ ।
पक्षयोः कृष्णपक्षश्च पूर्वपक्षात्प्रशस्यते॥ ॥१३-२३८-७॥

माघमासं सदा यस्तु वर्तते चैकभुक्ततः ।
मदर्चनपरो भूत्वा डम्भक्रोधविवर्जितः ।
मामिकामपि सावित्रीं सन्ध्यायां तु जपेद्बुधः॥ ॥१४-११३-१८॥

दत्त्वा दु दक्षिणामन्ते भोजयित्वा द्विजानपि ।MM-KK-14-03-113-019c नमिस्करोति तान्भक्त्या मद्गतेनान्तरात्मना ।
त्रिकालस्नानयुक्तस्य तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-१९॥

नीलकण्ठप्रयुक्तेन यानेनांऽबरशोभिना ।
पितृलोकं व्रजेच्छ्रीमान्सेव्यमानोप्सरोगणैः॥ ॥१४-११३-२०॥

तत्र प्रकामं क्रीडित्वा भद्राश्वेषूपजायते ।
ततश्च्युतश्चतुर्वेदी विप्रो भवति भूतले॥ ॥१४-११३-२१॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

83 फाल्गुन मास के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

फाल्गुन मास भर एकभुक्त (दिन में केवल एक बार भोजन) — अनुशासन पर्व 13.163, आश्वमेधिक पर्व 14.113।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.21 · म.भा. 14.113.22 · म.भा. 14.113.23 · म.भा. 14.113.24 · म.भा. 14.113.25

भगदैवतमासं तु एकभक्तेन यः क्षिपेत् ।
'सुभगो दर्शनीयश्च यशोभागी च जायते ।'
स्त्रीषु वल्लभतां याति वश्याश्चास्य भवन्ति ताः॥ ॥१३-१६३-२१॥

यश्चरेत्फाल्गुनं मासमेकभुक्तो जितेन्द्रियः ।
नमो ब्रह्मण्यदेवायेत्येतन्मन्त्रं जपेत्सदा॥ ॥१४-११३-२२॥

पायसं भोजयेद्विप्रान्व्रतान्ते संयतेन्द्रियः ।
मदर्चनपरोऽक्रोधस्तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-११३-२३॥

विमानं सारसैर्युक्तमारूढः कामगामि च ।
नक्षत्रलोके रमते नक्षत्रसदृशाकृतिः॥ ॥१४-११३-२४॥

ततश्चापि च्युतः कालात्केतुमालेषु जायते ।
तत्र प्रकामं क्रीडित्वा मानुषेषु मुनिर्भवेत्॥ ॥१४-११३-२५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

तिथि के नियम

84 प्रतिपदा श्राद्ध

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास प्रतिपदा को श्राद्ध — उसका फल (अनुशासन पर्व 13.134)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.134.10 · म.भा. 13.134.11 · म.भा. 13.134.12 · म.भा. 13.134.13

पितॄनर्च्य प्रतिपदि प्राप्नुयात्स्वगृहे स्त्रियः ।
अभिरूपप्रजायिन्यो दर्शनीया बहुप्रजाः॥ ॥१३-१३४-१०॥

स्त्रियो द्वितीयां जायन्ते तृतीयायां तु वाजिनः ।
चतुर्थ्यां क्षुद्रपशवो भवन्ति बहवो गृहे॥ ॥१३-१३४-११॥

पञ्चम्यां बहवः पुत्रा जायन्ते कुर्वतां नृप ।
कुर्वाणास्तु नराः षष्ठ्यां भवन्ति द्युतिभागिनः॥ ॥१३-१३४-१२॥

कृषिभागी भवेच्छ्राद्धं कुर्वाणः सप्तमीं नृप ।
अष्टम्यां तु प्रकुर्वाणो वाणिज्ये लाभमाप्नुयात्॥ ॥१३-१३४-१३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

85 वैशाख तृतीया श्राद्ध

महाभारत

पंचांग विवरण

वैशाख तृतीया को श्राद्ध (पक्ष नहीं बताया गया)।

मूल श्लोक: म.भा. 14.110.28 · म.भा. 14.110.29

वैशाखमासस्य तु या तृतीयाऽनवद्याऽसौ कार्तिकशुक्लपक्षे ।
नभस्यमासस्य च कृष्णपक्षे त्रयोदशी पञ्चदशी च माघे॥ ॥१४-११०-२८॥

उपप्लवे चन्द्रमसो रवेश्च श्राद्धस्य कालो ह्ययनद्वये च ।
पानीयमप्यत्र तिलैर्विमिश्रं दद्यात्पितृभ्यः प्रयतो मनुष्यः ।
श्राद्धं कृतं तेन समासहस्रं रहस्यमेतत्पितरो वदन्ति॥ ॥१४-११०-२९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

86 पंचमी के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर पंचमी: एकभुक्त उपवास; घर पर ब्राह्मण भोजन; ब्रह्मचर्य; क्षौर, सिर में तेल, काजल, दातुन का त्याग (इन दिनों लक्ष्मी का वास होता है)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.163.14 · म.भा. 13.163.15 · म.भा. 13.163.16 · म.भा. 13.211.43 · म.भा. 13.211.44

पञ्चम्यां वाऽपि षष्ठ्यां च पौर्णमास्यां च भारत ।
उपोष्य एकभक्तेन नियतात्मा जितेन्द्रियः॥ ॥१३-१६३-१४॥

क्षमावान्नूपसम्पन्नः सुरभिश्चैव जायते ।
नानपत्यो भवेत्प्राज्ञो दरिद्रो वा कदाचन॥ ॥१३-१६३-१५॥

यजिष्णुः पञ्चमीं षष्ठीं कुले भोजयते द्विजान् ।
अष्टमीमथ कौरव्य कृष्णपक्षे चतुर्दशीम् ।
उपोष्य व्याधिरहितो वीर्यवानभिजायते॥ ॥१३-१६३-१६॥

दीपप्रतिश्रयं चैव दद्यात्पाद्यासनं तथा ।
पञ्चमेऽहनि षष्ठे वा द्वादशेऽप्यष्टमेऽथवा ।
चतदुर्दशे पञ्चदशे ब्रह्मचारी सदा भवेत्॥ ॥१३-२११-४३॥

श्मश्रुकर्म शिरोभ्यङ्गमञ्जनं दन्तधावनम् ।
नैतेष्वहस्सु कुर्वीत तेषु लक्ष्मीः प्रतिष्ठिता॥ ॥१३-२११-४४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

87 षष्ठी-सप्तमी को सूर्य पूजा

महाभारत

पंचांग विवरण

सप्तमी या षष्ठी को सूर्य पूजा — लक्ष्मी की प्राप्ति।

मूल श्लोक: म.भा. 3.3.45 · म.भा. 3.3.46 · म.भा. 3.3.47

सप्तम्यामथवा षष्ठ्यां भक्त्या पूजां करोति यः ।
अनिर्विण्णोऽनहङ्कारी तं लक्ष्मीर्भजते नरम्॥ ॥३-३-४५॥

न तेषामापदः सन्ति नाधयो व्याधयस्तथा ।
ये तवानन्यमनसा कुर्वन्त्यर्चनवन्दनम्॥ ॥३-३-४६॥

सर्वरोगैर्विरहिताः सर्वपापविवर्जिताः ।
त्वद्भावभक्ताः सुखिनो भवन्ति चिरजीविनः॥ ॥३-३-४७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

88 अष्टमी का नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

अष्टमी को तेल का प्रयोग न करें। श्लोक अतिरिक्त अंश में है।

मूल श्लोक: म.भा. 13.161.135

'तैलं जन्मदिनेऽष्टम्यां चतुर्दश्यां च पर्वसु ।'
नक्षत्रे न च कुर्वीत यस्मिञ्जातो भवेन्नरः ।
न प्रोष्ठपदयोः कार्यं तथाऽऽग्नेये च भारत॥ ॥१३-१६१-१३५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

89 शुक्ल दशमी — पुण्डरीक तीर्थ स्नान

महाभारत

पंचांग विवरण

शुक्ल दशमी को पुण्डरीक तीर्थ में प्रवेश कर स्नान।

मूल श्लोक: म.भा. 3.81.83

शुक्लपक्षे दशम्यां च पुण्डरीकं समाविशेत् ।
तत्र स्नात्वा नरो राजन्पौण्डरीकफलं लभेत्॥ ॥३-८१-८३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

90 त्रयोदशी श्राद्ध

महाभारत

पंचांग विवरण

त्रयोदशी का श्राद्ध पितरों को प्रसन्न करता है; त्रयोदशी को श्राद्ध करने वाला जाति-बन्धुओं में श्रेष्ठ होता है (शास्त्रि-वाविल्ल प्रति का अतिरिक्त पाद)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.238.8 · म.भा. 13.76.17

अमावास्यां त्रयोदश्यां नवम्यां प्रतिपत्सु च ।
तिथिष्वेतासु तुष्यन्ति दत्तेनेह पितामहाः॥ ॥१३-२३८-८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

द्वादश्यामीहमानस्य नित्यमेव प्रदृश्यते ।
रजतं बहुवित्तं च सुवर्णं च मनोरमम् ।
ज्ञातीनां तु भवेच्छ्रेष्ठश्श्राद्धं कुर्वंस्त्रयोदशीम्॥ ॥१३-७६-१७॥

— महाभारते (शास्त्रि-वाविल्ल-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

91 चतुर्दशी के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

चतुर्दशी को श्राद्ध अशुभ; ब्रह्मचर्य; स्त्री-संग वर्जित। कृष्ण और शुक्ल चतुर्दशी को गंगा तट पर रहने वाला सात पीढ़ियों तक कुल को पवित्र करता है (शास्त्रि-वाविल्ल पाठ; कुम्भकोणम् पाठ में "दोनों पक्ष गया में")।

मूल श्लोक: म.भा. 13.134.18 · म.भा. 13.134.20 · म.भा. 13.161.30 · म.भा. 14.106.108 · म.भा. 3.67.95

अवश्यं तु युवानोऽस्य प्रमीयन्ते नरा गृहे ।
युद्धभागी भवेन्मर्त्यः कुर्वञ्श्राद्धं चतुर्दशीम्॥ ॥१३-१३४-१८॥

कृष्णपक्षे दशम्यादौ वर्जयित्वा चतुर्दशीम् ।
श्राद्धकर्मणि तिथ्यस्तु प्रशस्ता न तथेतराः॥ ॥१३-१३४-२०॥

अमावास्यां पौर्णमास्यां चतुर्दश्यां च जन्मनि ।
अष्टम्यामथ द्वादश्यां ब्रह्मचारी सदा भवेत्॥ ॥१३-१६१-३०॥

पर्वद्वये चतुर्दश्यामष्टम्यां सन्ध्ययोर्द्वयोः ।
आर्द्रायां जन्मनक्षत्रे विषुवे श्रवणेऽथवा ।
ये ग्राम्यधर्मविरतास्ते नराः स्वर्गगाप्तिनः॥ ॥१४-१०६-१०८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

कृष्णशुक्लचतुर्दश्यां गङ्गायां यो वसेन्नरः ।
पुनात्यासप्तमं राजन्कुलं नास्त्यत्र संशयः॥ ॥३-६७-९५॥

— महाभारते (शास्त्रि-वाविल्ल-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

92 कृष्ण चतुर्दशी

महाभारत

पंचांग विवरण

कृष्ण चतुर्दशी को उपवास; कुरुक्षेत्र के शंकर तीर्थ में वृषध्वज की सेवा।

मूल श्लोक: म.भा. 3.81.75 · म.भा. 3.81.76 · म.भा. 13.163.16

ततो गच्छेत राजेन्द्र शङ्करं लोकविश्रुतम् ।
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यामभिगम्य वृषध्वजम्॥ ॥३-८१-७५॥

लभेत सर्वकामान्हि स्वर्गलोकं च गच्छति ।
तिस्रः कोट्यस्तु तीर्थानां शङ्करे कुरुनन्दन॥ ॥३-८१-७६॥

यजिष्णुः पञ्चमीं षष्ठीं कुले भोजयते द्विजान् ।
अष्टमीमथ कौरव्य कृष्णपक्षे चतुर्दशीम् ।
उपोष्य व्याधिरहितो वीर्यवानभिजायते॥ ॥१३-१६३-१६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

93 चैत्र शुक्ल चतुर्दशी — सरस्वती संगम स्नान

महाभारत

पंचांग विवरण

चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को सरस्वती संगम (केशव) तीर्थ में स्नान।

मूल श्लोक: म.भा. 3.80.125 · म.भा. 3.80.126 · म.भा. 3.80.127

अश्वमेधमवाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत् ।
ततो गच्छेत राजेन्द्र सङ्गमं लोकविश्रुतम्॥ ॥३-८०-१२५॥

सरस्वत्या महापुण्यं केशवं समुपासते ।
यत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयश्च तपोधनाः॥ ॥३-८०-१२६॥

अभिगच्छन्ति राजेन्द्र चैत्रशुक्लचतुर्दशीम् ।
तत्र स्नात्वा नरव्याघ्र विन्देद्बहुसुवर्णकम् ।
सर्वपापविशुद्धात्मा ब्रह्मलोकं च गच्छति॥ ॥३-८०-१२७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

94 भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी श्राद्ध

महाभारत

पंचांग विवरण

नभस्य (भाद्रपद) कृष्ण त्रयोदशी को श्राद्ध।

मूल श्लोक: म.भा. 14.110.28 · म.भा. 14.110.29

वैशाखमासस्य तु या तृतीयाऽनवद्याऽसौ कार्तिकशुक्लपक्षे ।
नभस्यमासस्य च कृष्णपक्षे त्रयोदशी पञ्चदशी च माघे॥ ॥१४-११०-२८॥

उपप्लवे चन्द्रमसो रवेश्च श्राद्धस्य कालो ह्ययनद्वये च ।
पानीयमप्यत्र तिलैर्विमिश्रं दद्यात्पितृभ्यः प्रयतो मनुष्यः ।
श्राद्धं कृतं तेन समासहस्रं रहस्यमेतत्पितरो वदन्ति॥ ॥१४-११०-२९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

95 भाद्रपद कृष्ण पक्ष मघा श्राद्ध

महाभारत

पंचांग विवरण

भाद्रपद कृष्ण पक्ष में मघा नक्षत्र वाले दिन परमान्न से श्राद्ध। श्लोक अतिरिक्त अंश में हैं।

मूल श्लोक: म.भा. 13.189.31 · म.भा. 13.189.32 · म.भा. 13.189.33

एते दोषा मया प्रोक्तास्त्रिषु यः पादमुत्सृजेत् ।
विश्वामित्र उवाच
श्रूयतां परमं गुह्यं रहस्यं धर्मसंहितम् ।
परमान्नेन यो दद्यात्पितॄणामौपहारिकम्॥ ॥१३-१८९-३१॥

गजच्छायायां पूर्वस्यां कुतपे दक्षिणामुखः ।
यदा भाद्रपदे मासि भवते बहुले मघा॥ ॥१३-१८९-३२॥

श्रूयतां तस्य दानस्य यादृशो गुणविस्तरः ।
कृतं तेन महच्छ्राद्धं वर्षाणीह त्रयोदश॥ ॥१३-१८९-३३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

उपाकर्म, मुहूर्त प्रशस्ति

96 सामवेद उपाकर्म

रामायण

पंचांग विवरण

प्रौष्ठपद (भाद्रपद) मास — सामवेदियों के अध्ययनारम्भ (उपाकर्म) का काल।

मूल श्लोक: रा. 4.28.54

मासि प्रौष्ठपदे ब्रह्म ब्राह्मणानां विवक्षताम्।
अयमध्यायसमयः सामगानामुपस्थितः॥ ॥४-२८-५४॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

97 पुष्य — अभिषेक प्रशस्ति

रामायण

पंचांग विवरण

राज्याभिषेक के लिए पुष्य नक्षत्र (पुष्य योग) चुना जाता है।

मूल श्लोक: रा. 2.3.41 · रा. 2.4.2

तस्मात् त्वं पुष्ययोगेन यौवराज्यमवाप्नुहि।
कामतस्त्वं प्रकृत्यैव निर्णीतो गुणवानिति॥ ॥२-३-४१॥

श्व एव पुष्यो भविता श्वोऽभिषेच्यस्तु मे सुतः।
रामो राजीवपत्राक्षो युवराज इति प्रभुः॥ ॥२-४-२॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

98 उत्तरा फाल्गुनी — विवाह प्रशस्ति

रामायण

पंचांग विवरण

भग/प्रजापति देवता वाले उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में विवाह प्रशस्त है, ऐसा विद्वान् कहते हैं — जनक द्वारा राम आदि के विवाह निश्चित करने का प्रसंग।

मूल श्लोक: रा. 1.72.13 · रा. 1.71.24

उत्तरे दिवसे ब्रह्मन् फल्गुनीभ्यां मनीषिणः।
वैवाहिकं प्रशंसन्ति भगो यत्र प्रजापतिः॥ ॥१-७२-१३॥

मघा ह्यद्य महाबाहो तृतीयदिवसे प्रभो।
फल्गुन्यामुत्तरे राजंस्तस्मिन् वैवाहिकं कुरु।
रामलक्ष्मणयोरर्थे दानं कार्यं सुखोदयम्॥ ॥१-७१-२४॥

— श्रीमद्वाल्मीकीये रामायणे (गीताप्रेस-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

नक्षत्र के नियम (हर मास)

99 अश्विनी नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास अश्विनी नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.34 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.14

रथमश्वसमायुक्तं दत्त्वाऽश्विन्यां नरोत्तमः ।
हस्त्यश्वरथसम्पन्ने वर्चस्वी जायते कुले॥ ॥१३-९९-३४॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

बहुकुप्यकृतं वित्तं विन्दते रेवतीं श्रितः ।
अश्विनीष्वश्वान्विन्देत भरणीष्वायुरुत्तमम्॥ ॥१३-१३६-१४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

100 भरणी नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास भरणी नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.35 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.14

भरणीषु द्विजातिभ्यस्तिलधेनुं प्रदाय वै ।
गाः सुप्रभूताः प्राप्नोति नरः प्रेत्य यशस्तथा॥ ॥१३-९९-३५॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

बहुकुप्यकृतं वित्तं विन्दते रेवतीं श्रितः ।
अश्विनीष्वश्वान्विन्देत भरणीष्वायुरुत्तमम्॥ ॥१३-१३६-१४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

101 कृत्तिका नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास कृत्तिका नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)। कृत्तिका योग में उर्वशी/लौहित्य तीर्थ में स्नान; कृत्तिका (आग्नेय) को तेल/सिर-स्नान का त्याग।

मूल श्लोक: म.भा. 13.64.46 · म.भा. 13.99.5 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.2 · म.भा. 13.161.134 · म.भा. 13.161.135

उर्वशीं कृत्तिकायोगे गत्वा चैव समाहितः ।
लौहित्ये विधिवत्स्नात्वा पुण्डरीकफलं लभेत्॥ ॥१३-६४-४६॥

नारद उवाच ।
कृत्तिकासु महाभागे पायसेन ससर्पिषा ।
सन्तर्प्य ब्राह्मणान्साधूँल्लोकानाप्नोत्यनुत्तमान्॥ ॥१३-९९-५॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

श्राद्धं यः कृत्तिकायोगे कुर्वीत सततं नरः ।
अग्नीनाधाय सापत्यो यजेत विगतज्वरः॥ ॥१३-१३६-२॥

शिरःस्नातोथ कुर्वीत दैवं पित्र्यमथापि च॥ ॥१३-१६१-१३४॥

'तैलं जन्मदिनेऽष्टम्यां चतुर्दश्यां च पर्वसु ।'
नक्षत्रे न च कुर्वीत यस्मिञ्जातो भवेन्नरः ।
न प्रोष्ठपदयोः कार्यं तथाऽऽग्नेये च भारत॥ ॥१३-१६१-१३५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

102 रोहिणी नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास रोहिणी नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)। रोहिणी (या विष्णु के दिन) कपिला गाय के सिर पर डाले जल, गोमूत्र या ब्राह्मण के चरणोदक से स्नान।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.6 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.3 · म.भा. 14.115.55

रोहिण्यां प्रसृतैर्मार्गैर्मांसैरन्नेन सर्पिषा ।
पयोऽन्नपानं दातव्यमनृणार्थं द्विजातये॥ ॥१३-९९-६॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

अपत्यकामो रोहिण्यां तेजस्कामो मृगोत्तमे ।
क्रूरकर्मा ददच्छ्राद्धमार्द्रायां मानवो भवेत्॥ ॥१३-१३६-३॥

मस्तकान्निस्सृतैस्तोयैः कपिलाया युधिष्ठिर ।MM-KK-14-03-115-055c गोमूत्रेणापि यः स्नायाद्रोहिण्यां मम वा दिने ।
विप्रपादच्युतैर्वाऽपि तोयैः पापं प्रणश्यति॥ ॥१४-११५-५५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

103 मृगशिरा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास मृगशिरा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.7 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.3

दोग्ध्रीं दत्त्वा सवत्सां तु नक्षत्रे सोमदैवते ।
गच्छन्ति मानुषाल्लोकात्स्वर्गलोकमनुत्तमम्॥ ॥१३-९९-७॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

अपत्यकामो रोहिण्यां तेजस्कामो मृगोत्तमे ।
क्रूरकर्मा ददच्छ्राद्धमार्द्रायां मानवो भवेत्॥ ॥१३-१३६-३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

104 आर्द्रा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास आर्द्रा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)। आर्द्रा (रुद्र का नक्षत्र) को दीर्घायु चाहने वाले श्मशान न जाएँ; स्त्री-संग वर्जित।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.8 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.3 · म.भा. 13.207.15 · म.भा. 13.207.16 · म.भा. 14.106.108

आर्द्रायां कृसरं दत्त्वा तिलमिश्रमुपोषितः ।
नरस्तरति दुर्गाणि क्षुरधारांश्च पर्वतान्॥ ॥१३-९९-८॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

अपत्यकामो रोहिण्यां तेजस्कामो मृगोत्तमे ।
क्रूरकर्मा ददच्छ्राद्धमार्द्रायां मानवो भवेत्॥ ॥१३-१३६-३॥

स्थानं मे तत्र विहितं वीरस्थानमिति प्रिये ।
कपालशतसम्पूर्णमभिरूपं भयानकम्॥ ॥१३-२०७-१५॥

मध्याह्ने सन्ध्ययोस्तत्र नक्षत्रे रुद्रदेवते ।
आयुष्कामैरशुद्धैर्वा न गन्तव्यमिति स्थितिः॥ ॥१३-२०७-१६॥

पर्वद्वये चतुर्दश्यामष्टम्यां सन्ध्ययोर्द्वयोः ।
आर्द्रायां जन्मनक्षत्रे विषुवे श्रवणेऽथवा ।
ये ग्राम्यधर्मविरतास्ते नराः स्वर्गगाप्तिनः॥ ॥१४-१०६-१०८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

105 पुनर्वसु नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास पुनर्वसु नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.9 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.4

पूपान्पुनर्वसौ दत्त्वा तथैवान्नानि शोभने ।
यशस्वी रूपसम्पन्नो बह्वन्नो जायते कुले॥ ॥१३-९९-९॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

कृषिभागी भवेन्मर्त्यः कुर्वञ्श्राद्धं पुनर्वसौ ।
पुष्टिकामोऽथ पुष्येण श्राद्धमीहेत मानवः॥ ॥१३-१३६-४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

106 पुष्य नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास पुष्य नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.10 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.4

पुष्येण कनकं दत्त्वा कृतं वाऽकृतमेव च ।
अनालोकेषु लोकेषु सोमवत्स विराजते॥ ॥१३-९९-१०॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

कृषिभागी भवेन्मर्त्यः कुर्वञ्श्राद्धं पुनर्वसौ ।
पुष्टिकामोऽथ पुष्येण श्राद्धमीहेत मानवः॥ ॥१३-१३६-४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

107 आश्लेषा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास आश्लेषा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.11 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.5

आश्लेषायां तु यो रूप्यमृषभं वा प्रयच्छति ।
स सर्पभयनिर्मुक्तः सम्भवानधितिष्ठति॥ ॥१३-९९-११॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

आश्लेषायां ददच्छ्राद्धं धीरान्पुत्रान्प्रजायते ।
ज्ञातीनां तु भवेच्छ्रेष्ठो मघासु श्राद्धमावपन्॥ ॥१३-१३६-५॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

108 मघा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास मघा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)। मघा (पितृ देवता का नक्षत्र) को दान, पितरों को अर्पण।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.12 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.5 · म.भा. 13.234.20 · म.भा. 13.234.21 · म.भा. 13.234.23 · म.भा. 13.234.24 · म.भा. 14.110.27

मघासु तिलपूर्णानि वर्धमानानि मानवः ।
प्रदाय पुत्रपशुमानिह प्रेत्य च मोदते॥ ॥१३-९९-१२॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

आश्लेषायां ददच्छ्राद्धं धीरान्पुत्रान्प्रजायते ।
ज्ञातीनां तु भवेच्छ्रेष्ठो मघासु श्राद्धमावपन्॥ ॥१३-१३६-५॥

यथा सम्भाषितं पूर्वं दातव्यं तत्तथैव च ।
पुण्यक्षेत्रेषु यद्दत्तं पुण्यकालेषु वा यथा ।
तच्छोभनतरं विद्धि गौरवाद्देशकालयोः॥ ॥१३-२३४-२०॥

उमोवाच ।
यश्च पुण्यतमो देशस्तथा कालश्च शंस मे॥ ॥१३-२३४-२१॥

शरद्वसन्तकालश्च पुण्यमासस्तथैव च ।
शुक्लपक्षश्च पक्षाणां पौर्णमासी च पर्वसु॥ ॥१३-२३४-२३॥

पितृदैवतनक्षत्रनिर्मलो दिवसस्तथा ।
तच्छोभनतरं विद्धि चन्द्रसूर्यग्रहे तथा॥ ॥१३-२३४-२४॥

ग्रहोपरागे विषुवेऽयनान्ते पित्र्ये मघासु स्वसुते च जाते ।
गयेषु पिण्डेषु च पाण्डुपुत्र दत्तं भवेन्निष्कसहस्रतुल्यम्॥ ॥१४-११०-२७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

109 पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.13 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.6

फल्गुनीपूर्वसमये ब्राह्मणानामुपोषितः ।
भक्ष्यान्फाणितसंयुक्तान्दत्त्वा सौभाग्यमृच्छति॥ ॥१३-९९-१३॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

फल्गुनीषु ददच्छ्राद्धं सुभगः श्राद्धदो भवेत् ।
अपत्यभागुत्तरासु हस्तेन फलभाग्भवेत्॥ ॥१३-१३६-६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

110 उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.14 · म.भा. 13.99.15 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.6

घृतक्षीरसमायुक्तं विधिवत्षष्टिकौदनम् ।
उत्तराविषये दत्त्वा स्वर्गलोके महीयते॥ ॥१३-९९-१४॥

यद्यत्प्रदीयते दानमुत्तराविषये नरैः ।
महाफलमनन्तं तद्भवतीति विनिश्चयः॥ ॥१३-९९-१५॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

फल्गुनीषु ददच्छ्राद्धं सुभगः श्राद्धदो भवेत् ।
अपत्यभागुत्तरासु हस्तेन फलभाग्भवेत्॥ ॥१३-१३६-६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

111 हस्त नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास हस्त नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.16 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.6

हस्ते हस्तिरथं दत्त्वा चतुर्युक्तमुपोषितः ।
प्राप्नोति परमाँल्लोकान्पुण्यकामसमन्वितान्॥ ॥१३-९९-१६॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

फल्गुनीषु ददच्छ्राद्धं सुभगः श्राद्धदो भवेत् ।
अपत्यभागुत्तरासु हस्तेन फलभाग्भवेत्॥ ॥१३-१३६-६॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

112 चित्रा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास चित्रा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.17 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.7

चित्रायां वृषभं दत्त्वा पुण्यगन्धांश्च भारत ।
चरन्त्यप्सरसां लोके रमन्ते नन्दने तथा॥ ॥१३-९९-१७॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

चित्रायां तु ददच्छ्राद्धं लभेद्भूपवतः सुतान् ।
स्वातियोगे पितॄनर्च्य वाणिज्यमुपजीवति॥ ॥१३-१३६-७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

113 स्वाती नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास स्वाती नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.18 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.7

स्वात्यामथ धनं दत्त्वा यदिष्टतममात्मनः ।
प्राप्नोति लोकान्स शुभानिह चैव महद्यशः॥ ॥१३-९९-१८॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

चित्रायां तु ददच्छ्राद्धं लभेद्भूपवतः सुतान् ।
स्वातियोगे पितॄनर्च्य वाणिज्यमुपजीवति॥ ॥१३-१३६-७॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

114 विशाखा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास विशाखा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.19 · म.भा. 13.99.20 · म.भा. 13.99.21 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.8

विशाखायामनड्वाहं धेनुं दत्त्वा च दुग्धदाम् ।
सप्रासङ्गं च शकटं सधान्यं वस्त्रसंयुतम्॥ ॥१३-९९-१९॥

पितॄन्देवांश्च प्रीणाति प्रेत्य चानन्त्यमश्नुते ।
न च दुर्गाण्यवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति॥ ॥१३-९९-२०॥

दत्त्वा यथोक्तं विप्रेभ्यो वृत्तिमिष्टां स विन्दति ।
नरकादींश्च सङ्क्लेशान्नाप्नोतीति विनिश्चयः॥ ॥१३-९९-२१॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

बहुपुत्रो विशाखासु पुत्रमीहन्भवेन्नरः ।
अनुराधासु कुर्वाणो राज्यचक्रं प्रवर्तयेत्॥ ॥१३-१३६-८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

115 अनुराधा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास अनुराधा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.22 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.8

अनुराधासु प्रावारं वरान्नं समुपोषितः ।
दत्त्वा युगशतं चापि नरः स्वर्गे महीयते॥ ॥१३-९९-२२॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

बहुपुत्रो विशाखासु पुत्रमीहन्भवेन्नरः ।
अनुराधासु कुर्वाणो राज्यचक्रं प्रवर्तयेत्॥ ॥१३-१३६-८॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

116 ज्येष्ठा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास ज्येष्ठा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.23 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.9

कालशाकं तु विप्रेभ्यो दत्त्वा मर्त्यः समूलकम् ।
ज्येष्ठायामृद्धिमिष्टां वै गतिमिष्टां स गच्छति॥ ॥१३-९९-२३॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

आधिपत्यं व्रजेन्मर्त्यो ज्येष्ठायामपवर्जयन् ।
नरः कुरुकुलश्रेष्ठ ऋद्धो दमपुरःसरः॥ ॥१३-१३६-९॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

117 मूल नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास मूल नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.24 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.10

मूले मूलफलं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यः समाहितः ।
पितॄन्प्रीणयते चापि गतिमिष्टां च गच्छति ।॥ ॥१३-९९-२४॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

मूले त्वारोग्यमृच्छेत यशोऽषाढासु चोत्तमम् ।
उत्तरासु त्वषाढासु वीतशोकश्चरेन्महीम्॥ ॥१३-१३६-१०॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

118 पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.25 · म.भा. 13.99.26 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.10

अथ पूर्वास्वषाढासु दधिपात्राण्युपोषितः ।
कुलवृत्तोपसम्पन्ने ब्राह्मणे वेदपारगे॥ ॥१३-९९-२५॥

प्रदाय जायते प्रेत्य कुले सुबहुगोधने ।
उदमन्थं ससर्पिष्कं प्रभूतमधुफाणितम्॥ ॥१३-९९-२६॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

मूले त्वारोग्यमृच्छेत यशोऽषाढासु चोत्तमम् ।
उत्तरासु त्वषाढासु वीतशोकश्चरेन्महीम्॥ ॥१३-१३६-१०॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

119 उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.26 · म.भा. 13.99.27 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.10

प्रदाय जायते प्रेत्य कुले सुबहुगोधने ।
उदमन्थं ससर्पिष्कं प्रभूतमधुफाणितम्॥ ॥१३-९९-२६॥

दत्त्वोत्तरास्वषाढासु सर्वकामानवाप्नुयात् ।
दुग्धं त्वभिजिते योगे दत्त्वा मधुघृतप्लुतम् ।
धर्मनित्यो मनीषिभ्यः स्वर्गलोके महीयते॥ ॥१३-९९-२७॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

मूले त्वारोग्यमृच्छेत यशोऽषाढासु चोत्तमम् ।
उत्तरासु त्वषाढासु वीतशोकश्चरेन्महीम्॥ ॥१३-१३६-१०॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

120 धनिष्ठा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास धनिष्ठा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.29 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.12

गोप्रयुक्तं धनिष्ठासु यानं दत्त्वा समाहितः ।
वस्त्रराशिधनं सद्यः प्रेत्य राज्यं प्रपद्यते॥ ॥१३-९९-२९॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

राज्यभागी धनिष्ठायां भवेत नियतं नरः ।
नक्षत्रे वारुणे कुर्वन्भिषक्सिद्धिमवाप्नुयात्॥ ॥१३-१३६-१२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

121 शतभिषा नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास शतभिषा नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.30 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.12

गन्धाञ्शतभिषग्योगे दत्त्वा सागरुचन्दनान् ।
प्राप्नोत्यप्सरसां सङ्घान्प्रेत्य गन्धांश्च शाश्वतान्॥ ॥१३-९९-३०॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

राज्यभागी धनिष्ठायां भवेत नियतं नरः ।
नक्षत्रे वारुणे कुर्वन्भिषक्सिद्धिमवाप्नुयात्॥ ॥१३-१३६-१२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

122 पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.31 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.13

पूर्वप्रोष्ठपदायोगे राजमाषान्प्रदाय तु ।
सर्वभक्षफलोपेतः स वै प्रेत्य सुखी भवेत्॥ ॥१३-९९-३१॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

पूर्वप्रोष्ठपदाः कुर्वन्बहून्विन्दत्यजाविकान् ।
उत्तरासु प्रकुर्वाणो विन्दते गाः सहस्रशः॥ ॥१३-१३६-१३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

123 उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.32 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.13

औरभ्रमुत्तरायोगे यस्तु मांसं प्रयच्छति ।
स पितॄन्प्रीणयति वै प्रेत्य चानन्त्यमश्नुते॥ ॥१३-९९-३२॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

पूर्वप्रोष्ठपदाः कुर्वन्बहून्विन्दत्यजाविकान् ।
उत्तरासु प्रकुर्वाणो विन्दते गाः सहस्रशः॥ ॥१३-१३६-१३॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

124 रेवती नक्षत्र के नियम

महाभारत

पंचांग विवरण

हर मास रेवती नक्षत्र के दिन: नक्षत्र दान (अनुशासन पर्व 13.99) और काम्य श्राद्ध (13.136)।

मूल श्लोक: म.भा. 13.99.33 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.14

कांस्योपदोहनां धेनु रेवत्यां यः प्रयच्छति ।
सा प्रेत्य कामानादाय दातारमुपतिष्ठति॥ ॥१३-९९-३३॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

बहुकुप्यकृतं वित्तं विन्दते रेवतीं श्रितः ।
अश्विनीष्वश्वान्विन्देत भरणीष्वायुरुत्तमम्॥ ॥१३-१३६-१४॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस

125 अन्य काल नियम (बिना निश्चित तिथि के)

महाभारत

पंचांग विवरण

जिन नियमों का कोई एक निश्चित दिन नहीं, उनका सार: इन्द्रोत्सव; विवाह के लिए श्रेष्ठ कालांश (उत्तरायण, वैशाख, शुक्ल पक्ष, हस्त, तृतीया, मकर लग्न, बव करण — प्रत्येक अपने वर्ग में श्रेष्ठ, एक साथ आने वाला दिन नहीं); ऋतुओं और षडशीतिमुख संक्रान्तियों पर दान; अनध्याय के दिन; श्राद्ध के लिए कृष्ण पक्ष और अपराह्ण श्रेष्ठ; जन्म नक्षत्र को ब्रह्मचर्य और मांस त्याग; अष्टका श्राद्ध; ग्रीष्म में जलदान; वर्णों के अनुसार अग्न्याधान की ऋतुएँ आदि।

मूल श्लोक: म.भा. 1.64.21 · म.भा. 1.64.36 · म.भा. 1.64.37 · म.भा. 1.242.14 · म.भा. 1.242.15 · म.भा. 1.242.16 · म.भा. 3.203.124 · म.भा. 3.203.126 · म.भा. 3.203.125 · म.भा. 12.110.13 · म.भा. 12.110.20 · म.भा. 12.163.15 · म.भा. 12.250.12 · म.भा. 12.250.13 · म.भा. 12.250.14 · म.भा. 13.44.4 · म.भा. 13.99.27 · म.भा. 13.106.49 · म.भा. 13.111.19 · म.भा. 13.134.20 · म.भा. 13.134.21 · म.भा. 13.136.1 · म.भा. 13.136.11 · म.भा. 13.139.19 · म.भा. 13.139.20 · म.भा. 13.161.30 · म.भा. 13.161.134 · म.भा. 13.161.135 · म.भा. 13.161.136 · म.भा. 13.177.61 · म.भा. 13.177.65 · म.भा. 13.177.66 · म.भा. 13.193.18 · म.भा. 13.193.28 · म.भा. 13.193.29 · म.भा. 13.199.12 · म.भा. 13.199.13 · म.भा. 13.221.12 · म.भा. 13.221.13 · म.भा. 13.221.14 · म.भा. 13.233.14 · म.भा. 13.233.49 · म.भा. 13.233.50 · म.भा. 13.233.51 · म.भा. 13.234.20 · म.भा. 13.234.21 · म.भा. 13.234.23 · म.भा. 13.238.7 · म.भा. 13.238.9 · म.भा. 13.238.21 · म.भा. 13.242.31 · म.भा. 14.103.66 · म.भा. 14.103.67 · म.भा. 14.103.68 · म.भा. 14.111.48 · म.भा. 14.111.49 · म.भा. 14.111.50 · म.भा. 14.111.51 · म.भा. 14.111.52

मार्गशीर्षे महाराज पूर्वपक्षे महामखम् ।
ततःप्रभृति चाद्यापि यष्टेः क्षितिपसत्तमैः ॥' ॥ ॥१-६४-२१॥

ये पूजयिष्यन्ति च मुदा यथा चेदिपतिर्नृपः ।
कारयिष्यन्ति च मुदा यथा चेदिपतिर्नृपः॥ ॥१-६४-३६॥

तेषां श्रीर्विजयश्चैव सराष्ट्राणां भविष्यति ।
तथा स्फीतो जनपदो मुदितश्च भविष्यति॥ ॥१-६४-३७॥

अयनं चैव मासश्च ऋतुः पक्षस्तथा तिथिः ।
करणं च मुहूर्तं च लग्नसम्पत्तथैव च॥ ॥१-२४२-१४॥

विवाहस्य विशालाक्षि प्रशस्तं चोत्तरायणम् ।
वैशाखश्चैव मासानां पक्षाणां शुक्ल एव च॥ ॥१-२४२-१५॥

नक्षत्राणां तथा हस्तस्तृतीया च तिथिष्वपि ।
लग्नो हि मकरः श्रेष्ठः करणानां बवस्तथा॥ ॥१-२४२-१६॥

पर्वसु द्विगुणं दानमृतौ दशगुणं भवेत् ।
`अब्दे दशगुणं प्रोक्तमनन्तं विषुवे भवेत्' ॥ ॥३-२०३-१२४॥

ऋतुषु दशगुणं वदन्ति दत्तं शतगुणमृत्वयनादिषु ध्रुवम् ।
भवति सहस्रगुणं दिनस्य राहोर्विषुवति चाक्षयमश्नुते फलम्॥ ॥३-२०३-१२६॥

अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखेषु च ।
चन्द्रसूर्योपरागे च दत्तमक्षयमुच्यते॥ ॥३-२०३-१२५॥

अनध्यायेषु ये विप्राः स्वाध्यायं नैव कुर्वते ।
तपोनिष्ठाः सुतपसो दुर्गाण्यतितरन्ति ते॥ ॥१२-११०-१३॥

ये च श्राद्धानि कुर्वन्ति तिथ्यांतिथ्यां प्रजार्थिनः ।
सुविशुद्धेन मनसा दुर्गाण्यतितरन्ति ते॥ ॥१२-११०-२०॥

इष्टिं वैश्वानरीं नित्यं निर्वपेदब्दपर्यये ।
अविकल्पः पुरा धर्मो धर्मवादैस्तु केवलः॥ ॥१२-१६३-१५॥

दन्तोलूखलिकाः केचिदश्मकुट्टास्तथा परे ।
शुक्लपक्षे पिबन्त्येके यवागूं क्वथितां सकृत्॥ ॥१२-२५०-१२॥

कृष्णपक्षे पिबन्त्यन्ये भुञ्जते वा यथागतम् ।
मूलैरेके फलैरेके पुष्पैरेके दृढव्रताः॥ ॥१२-२५०-१३॥

वर्तयन्ति यथान्यायं वैखानसमतं श्रिताः ।
एताश्चान्याश्च विविधा दीक्षास्तेषां मनीषिणाम्॥ ॥१२-२५०-१४॥

श्राद्धकाले च विप्राणां य इमां श्रावयेच्छुचिः ।
न तत्र रक्षसां भागो नासुराणां च विद्यते॥ ॥१३-४४-४॥

दत्त्वोत्तरास्वषाढासु सर्वकामानवाप्नुयात् ।
दुग्धं त्वभिजिते योगे दत्त्वा मधुघृतप्लुतम् ।
धर्मनित्यो मनीषिभ्यः स्वर्गलोके महीयते॥ ॥१३-९९-२७॥

एतद्दानं न्यायलब्धं द्विजेभ्यः पात्रे दत्तं प्रापणीयं परीक्ष्य ।
काम्याष्टम्यां वर्तितव्यं दशाहं रसैर्गवां शकृता प्रस्नवैर्वा॥ ॥१३-१०६-४९॥

गा वै दत्त्वा गोव्रती स्यात्त्रिरात्रं निशां चैकां संवसेतेह ताभिः ।
काम्याष्टम्यां वर्तितव्यं त्रिरात्रं रसैर्वा गोः शकृता प्रस्रवैर्वा॥ ॥१३-१११-१९॥

कृष्णपक्षे दशम्यादौ वर्जयित्वा चतुर्दशीम् ।
श्राद्धकर्मणि तिथ्यस्तु प्रशस्ता न तथेतराः॥ ॥१३-१३४-२०॥

यथा चैवापरः पक्षः पूर्वपक्षाद्विशिष्यते ।
तथा श्राद्धस्य पूर्वाह्लादपराह्णो विशिष्यते॥ ॥१३-१३४-२१॥

भीष्म उवाच
यमस्तु यानि श्राद्धानि प्रोवाच शशबिन्दवे ।
तानि मे शृणु काम्यानि नक्षत्रेषु पृथक्पृथक्॥ ॥१३-१३६-१॥

श्राद्धं त्वभिजितौ कुर्वन्विद्यां श्रेष्ठामवाप्नुयात् ।
श्रवणेषु ददच्छ्राद्धं प्रेत्य गच्छेत्स तद्गतिम्॥ ॥१३-१३६-११॥

सदा नावि जलं तज्ज्ञाः प्रयच्छन्ति समाहिताः ।
मासार्धे कृष्णपक्षस्य कुर्यान्निर्वपणानि वै॥ ॥१३-१३९-१९॥

पुष्टिरायुस्तथा वीर्यं श्रीश्चैव पितृभक्तितः॥ ॥१३-१३९-२०॥

अमावास्यां पौर्णमास्यां चतुर्दश्यां च जन्मनि ।
अष्टम्यामथ द्वादश्यां ब्रह्मचारी सदा भवेत्॥ ॥१३-१६१-३०॥

शिरःस्नातोथ कुर्वीत दैवं पित्र्यमथापि च॥ ॥१३-१६१-१३४॥

'तैलं जन्मदिनेऽष्टम्यां चतुर्दश्यां च पर्वसु ।'
नक्षत्रे न च कुर्वीत यस्मिञ्जातो भवेन्नरः ।
न प्रोष्ठपदयोः कार्यं तथाऽऽग्नेये च भारत॥ ॥१३-१६१-१३५॥

दारुणेषु च सर्वेषु प्रत्यरिं च विवर्जयेत् ।
ज्योतिषे यानि चोक्तानि तानि सर्वाणि वर्जयेत्॥ ॥१३-१६१-१३६॥

कौमुद्यास्तु विशेषेण शुक्लपक्षे नराधिप ।
वर्जयेत्सर्वमांसानि धर्मो ह्यत्र विधीयते॥ ॥१३-१७७-६१॥

मांसं तु कौमुदं पक्षं वर्जितं पार्थ राजभिः ।
सर्वभूतात्मभूतस्थैर्विदितार्थपरावरैः॥ ॥१३-१७७-६५॥

नाभागेनाम्बरीषेण गयेन च महात्मना ।
आयुषाऽथानरण्येन दिलीपरघुसूनुभिः॥ ॥१३-१७७-६६॥

उपानहौ च च्छत्रं च कपिला च यथातथम् ।
पुष्करे कपिला देया ब्राह्मणे वेदपारगे॥ ॥१३-१९३-१८॥

कपिलां ये प्रयच्छन्ति ब्राह्मणे वेदपारगे ।
पुष्करे च विशेषेण श्रूयतां तस्य यत्फलम्॥ ॥१३-१९३-२८॥

गोशतं सवृषं तेन दत्तं भवति शाश्वतम् ।
पापं कर्म च यत्किञ्चिद्ब्रह्महत्यासमं भवेत् ।
शोधयेत्कपिला ह्येका प्रदत्तं गोशतं यथा॥ ॥१३-१९३-२९॥

कृष्णपक्षे तु यः श्राद्धं पितॄणामश्नुते द्विजः ।
अन्नमेतदहोरात्रात्पूतो भवति ब्राह्मणः॥ ॥१३-१९९-१२॥

न च सन्ध्यामुपासीत न च जाप्यं प्रवर्तयेत् ।
न सङ्किरेत्तदन्नं च ततः पूयेत ब्राह्मणः॥ ॥१३-१९९-१३॥

महेश्वर उवाच ।
ये पुरा मनुजा देवि सर्वप्राणिषु निर्दयाः ।
घ्नन्ति बालांश्च भुञ्जन्ते मृगाणां पक्षिणामपि॥ ॥१३-२२१-१२॥

गुरुविद्वेषिणश्चैव परपुत्राभ्यसूयकाः ।
पितृपूजां न कुर्वन्ति यथोक्तां चाष्टकादिभिः॥ ॥१३-२२१-१३॥

एवंयुक्तसमाचाराः पुनर्जन्मनि शोभने ।
मानुष्यं वा चिरात्प्राप्य निरपत्या भवन्ति ते ।
पुत्रशोकयुताश्चापि नास्ति तत्र विचारणा॥ ॥१३-२२१-१४॥

न शक्नुयादपि तथा कौमुदीमासमेव च ।
जन्मनक्षत्रतिथिषु सदा पर्वसु रात्रिषु ।
वर्जनीयं तथा मांसं परत्र हितमिच्छता॥ ॥१३-२३३-१४॥

व्रतवद्धारितं चैव ब्रह्मचर्यमकल्मषम् ।
नित्यं संरक्षितं तस्य नैष्ठिकानां विधियते ।
तदिष्यते गृहस्थानां कालमुद्दिश्य कारणम्॥ ॥१३-२३३-४९॥

जन्मनक्षत्रयोगेषु पुण्यवासेषु पर्वसु ।
देवताधर्मकार्येषु ब्रह्मचर्यव्रतं चरेत्॥ ॥१३-२३३-५०॥

ब्रह्मचर्यव्रतफलं लभेद्दारव्रती सदा ।
शौचमायुस्तथाऽऽरोग्यं लभ्यते ब्रह्मचारिभिः॥ ॥१३-२३३-५१॥

यथा सम्भाषितं पूर्वं दातव्यं तत्तथैव च ।
पुण्यक्षेत्रेषु यद्दत्तं पुण्यकालेषु वा यथा ।
तच्छोभनतरं विद्धि गौरवाद्देशकालयोः॥ ॥१३-२३४-२०॥

उमोवाच ।
यश्च पुण्यतमो देशस्तथा कालश्च शंस मे॥ ॥१३-२३४-२१॥

शरद्वसन्तकालश्च पुण्यमासस्तथैव च ।
शुक्लपक्षश्च पक्षाणां पौर्णमासी च पर्वसु॥ ॥१३-२३४-२३॥

माघप्रोष्ठपदौ मासौ श्राद्धकर्मणि पूजितौ ।
पक्षयोः कृष्णपक्षश्च पूर्वपक्षात्प्रशस्यते॥ ॥१३-२३८-७॥

पूर्वाह्णे शुक्लपक्षे च रात्रौ जन्मदिनेषु वा ।
युग्मेष्वहस्सु च श्राद्धं न च कुर्वीत पण्डितः॥ ॥१३-२३८-९॥

आनन्त्याय भवेद्दत्तं खड्गमांसं पितृक्षये ।
पायसं सतिलं क्षौद्रं खड्गमांसेन सम्मितम्॥ ॥१३-२३८-२१॥

दिवा च शुक्लपक्षश्च उत्तरायणमेव च ।
मुमूर्षूणां प्रशस्तानि विपरीतं तु गर्हितम्॥ ॥१३-२४२-३१॥

पानीयं यः प्रयच्छेद्वै जीवानां जीवनं परम् ।
ग्रीष्मे च त्रिषु मासेषु तस्य पुण्यफलं शृणु॥ ॥१४-१०३-६६॥

कपिलाकोटिदानस्य यत्पुण्यं तु विधीयते ।
तत्पुण्यफलमाप्नोति पानीयं यः प्रयच्छति॥ ॥१४-१०३-६७॥

पूर्णचन्द्रप्रकाशेन विमानेन विराजता ।
स गच्छेच्चन्द्रभवनं सेव्यमानोप्सरोगणैः॥ ॥१४-१०३-६८॥

वसन्ते ब्राह्मणस्य स्यादाधेयोऽग्निर्नराधिप ।
वसन्तो ब्राह्मणो ज्ञेयो वेदयोनिः स उच्यते॥ ॥१४-१११-४८॥

अग्न्याधेयं तु येनाथ वसन्ते क्रियतेऽनघ ।
तस्य श्रीर्ब्रह्मवृद्धिश्च ब्राह्मणस्य विवर्धते॥ ॥१४-१११-४९॥

क्षत्रियस्याग्निराधेयो ग्रीष्मे श्रेष्ठः स वै नृप ।MM-KK-14-03-111-050c येनाधानं तु वै ग्रीष्मे क्रियते तस्य वर्धते ।
श्रीः प्रजाःक पशवश्चैव वित्तं तेजो बलं यशः॥ ॥१४-१११-५०॥

शरदृतौ तु वैश्यस्य ह्याधानीयो हुताशनः ।
शरद्रात्रं स्वयं वैश्यो वैश्ययोनिः स उच्यते॥ ॥१४-१११-५१॥

शरद्याधानमेवं वै क्रियते येन पाण्डव ।
तस्यापि श्रीः प्रजाऽऽयुश्च पशवोऽर्थश्च वर्धते॥ ॥१४-१११-५२॥

— महाभारते (कुम्भघोण-संस्करणम्)

↑ विषय-सूची पर वापस